मनुष्य क्या है?

अध्याय 2

परमेश्वर का स्वरूप

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1
पद 1
झूठे देवताओं के चित्र 2
मूर्तियां 2
राजा 4
सच्चे परमेश्वर के स्वरूप 5
शब्दावली 5
यीशु 7
अधिकार 9
गुण 11
नैतिक 11
बौद्धिक 14
आत्मिक 16
संबंध 17
परमेश्वर 17
परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करना 18
पवित्र आराधना को बढ़ावा देना 19
परमेश्वर के राज्य को बनाना 20
मनुष्य 21
सम्मान 21
न्याय 22
सृष्टि 23
उपसंहार 25

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मनुष्य क्या है?

अध्याय दो

परमेश्वर का स्वरूप

प्रस्तावना

क्या आपने कभी ऐसे चित्र देखे हैं जो छोटे बच्चों ने अपने माता-पिता की बनाई हैं? वे अकसर माता-पिता के बिलकुल जैसे नहीं दिखते हैं, फिर भी माता-पिता इन तस्वीरों को सम्भाल कर रखते हैं। उनके लिए, चित्रों का मूल्य कला की गुणवत्ता पर नहीं होता, लेकिन उन भावनाओं में जो उनके बच्चे उन के लिए रखते हैं। चाहे चित्र कितने भी खराब बने हो सकते हैं, फिर भी वे माता-पिता को दर्शाते हैं। और कुछ-कुछ ऐसा ही आधुनिक मानवता के लिए सच है। हम लोग परमेश्वर के सिद्ध तस्वीर नहीं हैं, लेकिन हम फिर भी उसके स्वरूप हैं। और यह हमें गरिमा, आदर और अधिकार देता है, और साथ ही संसार में एक बहुत ही उच्च बुलाहट।

हमारी श्रृंखला, *मनुष्य क्या है?* का यह दूसरा पाठ है। इस पाठ का शीर्षक हमने रखा है "परमेश्वर का स्वरूप" क्योंकि हम जाँच करेंगे कि मनुष्यों के लिए परमेश्वर के स्वरूप में बनाये जाने का अर्थ क्या है।

इससे पहले पाठ में, हमने देखा कि परमेश्वर के स्वरूप में होना परमेश्वर की प्रतिमा या तस्वीर के जैसा होना है। प्राचीन मध्य-पूर्व में, नागरिकों को राजा की परोपकारिता और महानता को याद दिलाने, राजा के प्रति लोगों के आज्ञापालन को प्रोत्साहित करने, और यह दिखाने के लिए कि राजा अपने लोगों के साथ मौजूद है, राजा की तस्वीरों को पूरे राज्य भर में लगाया जाता था। इसी तरह से, मनुष्यों को परमेश्वर की समानता के रूपों में रचा गया है। जैसा कि हम उत्पत्ति 1:27 में पढ़ते हैं:

> **परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की (उत्पत्ति 1:27)।**

मनुष्य शारीरिक प्रतिनिधित्व हैं जो पूरी सृष्टि को परमेश्वर की सामर्थ्य, अधिकार और भलाई को याद दिलाते हैं। और हमारे माध्यम से, वह अपने शासन को संसार और उसके सारे जीवों के ऊपर प्रकट करता है।

इस पाठ में, हम परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मानवता की भूमिका के तीन पहलूओं पर विचार करेंगे। सबसे पहले, हम परमेश्वर के स्वरूप को उसके पद या पदवी के रूप में पता लगायेंगे जो हमारे अधिकार में है। दूसरा, हम उन गुणों पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो कि परमेश्वर के स्वरूप के रूप में हमारे पास हैं। और तीसरा, परमेश्वर के स्वरूप के रूप में हम अपने संबंधों की प्रकृति का वर्णन करेंगे। आइए पहले अपने पद को देखते हैं।

पद

"परमेश्वर के स्वरूप" का पद उस अधिकार में निहित है जिसे परमेश्वर ने मानवता को सौंपा। जैसा कि हमने पहले के पाठ में देखा, परमेश्वर ने अपनी ओर से उसकी सृष्टि के ऊपर शासन करने के लिए मनुष्यों को नियुक्त किया। उत्पत्ति 1:27-28 को सुनिए:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। परमेश्वर ने उनको आशीष दी और उनसे कहा, "फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो। और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो (उत्पत्ति 1:27-28)।

पवित्र शास्त्र द्वारा परमेश्वर के स्वरूप में हमारा परिचय देने के ठीक बाद, यह कहता है कि हम सृष्टि पर शासन करते हैं। इसलिए, परमेश्वर के स्वरूप में होने का एक महत्वपूर्ण पहलू है कि हम प्रत्यायोजित शासक का पद धारण करते हैं। ईश्वरीय-ज्ञान के शब्दों में, हम परमेश्वर के "उप-राज प्रतिनिधि" हैं — उसके प्रशासनिक प्रतिनिधि या, प्राचीन मध्य-पूर्व के शब्दों में, उसके सेवक या "दास" राजा।

बाइबल के समय में झूठे देवताओं के चित्रों ने कैसे कार्य किया इस पर विचार करने के द्वारा कि हम अपने पद का पता लगाएंगे। और दूसरा, हम देखेंगे कि कैसे ये चित्र सच्चे परमेश्वर के स्वरूप के रूप में हमारी भूमिका पर प्रकाश डालते हैं। आइए झूठे देवताओं के चित्रों के साथ शुरू करते हैं।

झूठे देवताओं के चित्र

इस पाठ में अपने उद्देश्यों के लिए, हम झूठे देवताओं के दो प्रकारों के चित्रों पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो कि प्राचीन मध्य-पूर्व में प्रचलित थे: मूर्तियां और राजा लोग। आइए पहले मूर्तियों को देखें।

मूर्तियां

> प्राचीन मध्य-पूर्व के धर्मों के हमारे अध्ययन और खोज के माध्यम से, हम जानते हैं कि मूर्तियों की पूजा बहुत आम थी। वे उनकी पूजा करते थे और उन्हें शक्ति एवं कई आशीषों का स्रोत मानते थे। परमेश्वर ने अपने लोगों को उसकी या उसके जैसी मूर्तियां या चित्रों को बनाने से मना किया। मुख्य कारण यह है कि परमेश्वर आत्मा है और किसी भी भौतिक शरीर या चित्र के द्वारा परिभाषित नहीं किया जा सकता है। परमेश्वर की शक्ति और ऐश्वर्य किसी भी अन्य वस्तु के माध्यम से जो मूर्त हैं उसकी आराधना करने की हमें अनुमित देने से उसे रोकता है।
>
> — डॉ. रियाड कासिस, अनुवादित

मूर्तियां आमतौर पर हाथ से बनाए गए चित्र थे। लेकिन वे केवल देवताओं के दृश्यमान प्रतिनिधि होने के लिए ही अभिप्रेत नहीं थे। जब मूर्ति को बनाया जाता था, तो यह सोचा जाता था कि यह जिस देवता का प्रतिनिधित्व करता है आत्मिक रूप से मूर्ति में वास करता या रहता है। यही कारण है कि प्राचीन धर्मों ने अपनी मूर्तियों को इतनी श्रद्धा दी। उनका मानना था कि चित्र ऐसे माध्यम थे जिनका इस्तेमाल देवताओं ने अपने लोगों के साथ मौजूद रहने के लिए किया था। इस रीति से, मूर्तियां स्वयं देवताओं के प्रतिनिधि, और यहां तक कि स्थानापन्न बन गए।

इस विश्वास का शरुआती ऐतिहासिक सबूत एक मिस्री स्टेला, या खुदे हुए पत्थर पर, पिरामिड युग के दौरान, तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में रिकॉर्ड किए गए हैं। यह बताता है कि प्टाह देवता ने अन्य देवताओं के लिए वास करने हेतु मूर्तियों का निमार्ण किया। 1912 में प्रकाशित जेम्स हेनरी ब्रेस्टेड के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

कार्य, *डेवलेपमेंट ऑफ रिलीजन एंड थॉट इन एंशियन्ट ईजिप्ट,* में दिए गए शिलालेख के इस अनुवाद को सुनें:

> **[प्टाह] ने उनके शरीरों की समानता को उनके दिल की संतुष्टि के अनुसार बनाया। फिर देवताओं ने हर लकड़ी और हर पत्थर और हर धातु के अपने शरीरों में प्रवेश किया।**

हबक्कूक भविष्यद्वक्ता ने इस विश्वास की हबक्कूक 2:18-19 में आलोचना की, जहाँ उसने लिखा:

> **खुदी हुई मूरत में क्या लाभ देखकर बनानेवाले ने उसे खोदा है?...हाय उस पर जो काठ से कहता है, "जाग!" या अबोल पत्थर से, "उठ!" क्या वह सिखाएगा? वह सोने चाँदी से मढ़ा हुआ है, परन्तु उसमें आत्मा नहीं है।**

झूठे धर्म जिनकी आलोचना हबक्कूक ने की, मानते थे कि एक दिव्य तरल या सांस मूर्तियों के अन्दर वास करती है, अर्थात कि उनके देवता सुन सकते थे और शायद उन मूर्तियों के माध्यम से उन्हें जवाब दे सकते थे। लेकिन हबक्कूक ने जोर देकर कहा कि मूर्तियों के भीतर ऐसी कोई दिव्य उपस्थिति नहीं थी।

इसी तरह, यशायाह 44 में, परमेश्वर ने मूर्तियों के उपयोग का यह कहकर मजाक उड़ाया कि बढ़ई उसी लकड़ी से मूर्ति को बनाता है जिससे वह आग तैयार करता है और अपना खाना बनाता है। यह स्पष्ट होना चाहिए कि मूर्ति किसी भी तरह से विशेष नहीं थी। लेकिन मूर्तिपूजक इतने बहक जाते हैं कि वे स्वयं को बताए गए झूठ की भी पहचान नहीं कर पाते। जैसा कि हम यशायाह 44:13-20 में पढ़ते हैं:

> **बढ़ई...देवदार को काटता, या बांजवृक्ष या तूस का वृक्ष...वह उन में से [कुछ] सुलगाकर तापता है, वह उसको जलाकर रोटी बनाता है। लेकिन उसी से वह देवता भी बनाकर उसको दण्डवत् करता है; वह मूरत खुदवाकर उसके साम्हने प्रणाम करता है,,,कोई इस पर ध्यान नहीं करता, और न किसी को इतना ज्ञान वा समझ रहती है कि कह सके..."क्या मैं काठ को प्रणाम करूं? ... क्या मेरे दाहिने हाथ में मिथ्या नहीं?" (यशायाह 44:13-20)।**

प्राचीन मूर्तिपूजक मानते थे कि जब उन्होंने अपनी मूर्तियों को खाना चढ़ाया, या तेल से उनका अभिषेक किया, या अन्य तरीकों से उनका अभिषेक किया, तो उनके देवता इस बात से गोरवान्वित होते और लाभान्वित होते थे। लेकिन वास्तविकता में, मूर्तियाँ शक्तिहीन हैं और वे किसी भी वस्तु की आत्मा से आबाद नहीं हैं। पवित्र शास्त्र सिखाता है कि झूठे देवता वास्तव में शैतान हैं, जैसा कि हम व्यवस्थाविवरण 32:17; भजन 106:37; और 1 कुरिन्थियों 10:20 में पढ़ते हैं। *अन्य* झूठे देवता पूरी तरह से काल्पनिक हैं। और सभी मामलों में, एक मूर्ति बेकार और शक्तिहीन है।

पवित्र शास्त्र इस बात से इनकार नहीं करता कि मूर्तियाँ देवताओं की प्रतिमाएं हैं। यह सिर्फ इस बात पर जोर देता है कि वे जिन देवताओं को दर्शाते हैं वे झूठे हैं, और कि प्रतिमाएं शक्तिहीन हैं। लेकिन ये झूठे धर्म जितने भी गलत थे, फिर भी यह समझने में वे हमारी मदद कर सकते हैं कि प्राचीन लोग "परमेश्वर के स्वरूप" शब्द को कैसे समझते थे। वे हमें दिखाते हैं कि प्राचीन दर्शकों के लिए, देवता की प्रतिमा एक पवित्र वस्तु थी। प्रतिमाओं ने देवताओं को दर्शाया। उन्होंने देवताओं में विश्वास को व्यक्त किया एवं उन्हें बढ़ावा दिया। उन्होंने देवताओं की प्रतिष्ठा का प्रसार किया। और उन्हें माध्यम के रूप में माना जाता था जिनका इस्तेमाल देवताओं ने अपने लोगों के साथ रहने और आशीर्वाद देने के लिए किया।

यह देखने के बाद कि मूर्तियाँ कैसे झूठे देवताओं के रूप में कार्य करते थे, आइए मानवीय राजाओं की ओर मुड़ते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

राजा

प्राचीन मध्य-पूर्व की कई संस्कृतियों में, राजाओं को उन देवताओं का स्वरूप कहा जाता था जिनकी उन्होंने सेवा की। यह आंशिक रूप से था क्योंकि राजाओं के लिए सोचा जाता था कि देवताओं तक उनकी विशेष पहुँच है, उसी तरह से जैसे देवताओं को मूर्तियों में मौजूद माना जाता था। और यह आंशिक रूप से था क्योंकि राजाओं ने देवताओं की इच्छा को प्रतिबिंबित या व्यक्ति के रूप में दिखाया। राजाओं से अपेक्षा थी कि वे देवताओं की इच्छा और ज्ञान को सीखें, और फिर उस इच्छा को अपने राज्य भर में लागू करें।

उदाहरण के लिए, मिस्र के नए साम्राज्य काल में, लगभग 1550 ई.पू. से शुरू होकर, फिरौन को विभिन्न देवताओं के स्वरूप के रूप में कहा जाने लगा। और यह मान्यता पुराने नियम के काल में भी जारी रही। हम जानते हैं कि 16वी शताब्दी ई.पू. में शासन करने वाले अमोसिस 1, को सूर्य देवता "रे का स्वरूप," कहा जाता था। अमेनोफिस III, जिसने 14वीं शताब्दी ई.पू. में शासन किया था, उसको अमोन देवता द्वारा "मेरे जीवित स्वरूप" के रूप में संदर्भित किया गया था। और अमोन-रे देवता ने अमेनोफिस III से कहा, "तू मेरा प्रिय पुत्र है...मेरा स्वरूप...मैंने तुझे शांति से पृथ्वी पर शासन करने के लिए दिया है।" जैसा कि हम इन संदर्भों में देख सकते हैं, फिरौन राजाओं को देवताओं के स्वरूप के समान माना जाता था क्योंकि उन्होंने देवताओं के पृथ्वी वाले राज्यों में शासन किया। ऐसा माना जाता था कि देवताओं ने उन्हें विशेष अनुग्रह दिखाया, उनके साथ घनिष्ठ संवाद बनाए रखा, और राजाओं से अपनी इच्छा को पूरा करने की अपेक्षा की।

हम मेसोपोटामिया के कुछ राज्यों जैसे असीरिया में कुछ इसी तरह का देखते हैं, हालांकि वहाँ यह प्रथा कम प्रचलित थी। विभिन्न राजाओं को शमश, सूर्य देवता के स्वरूप के समान, असीरिया के सभी देवताओं के शासक मार्डूक के स्वरूप में, और बेल, जिसका अर्थ है "प्रभु," जो कि मार्डुक का दूसरा नाम है, इनके स्वरूप के समान संदर्भित किया गया था। और कभी-कभी, बिना विशिष्ट देवता का नाम लिए, केवल एक देवता के स्वरूप के समान पहचाना गया। उदाहरण के लिए, *स्टेट आर्काईव ऑफ़ असीरिया* के खंड 10, अध्याय 10 में, एक पुजारी अदद-शुमू-यूसुर से राजा एशरहादोन के लिए एक पत्र है। लगभग 681 और 669 के बीच अदद-शुमू-यूसुर ने लिखा:

> **मनुष्य देवता की छाया है...लेकिन राजा देवता का स्वरूप है।**

एक पहले पत्र में, अदद-शूमु-यूसुर ने कहा था कि ऐसारहडोन और उसका पिता, अश्शूरी सम्राट सेनाचेरीब, दोनों का राजा बेल देवता के स्वरूप थे। तो, उसका तर्क यह नहीं था कि ऐसारहडोन ही विशेष रूप से देवता का स्वरूप था। इसके विपरीत, अदद-शूमु-यूसुर कह रहा था कि अन्य लोगों से अलग राजाओं का देवताओं के साथ करीबी का संबंध था। और इसलिए, अन्य लोगों की तुलना में राजा लोग देवताओं के ज्यादा समान थे।

अदद-शूमु-यूसुर के इन शब्दों में, कि "मनुष्य देवता की छाया है," ऐसा संकेत हो सकता है कि प्राचीन मध्य-पूर्व ने स्वरूप के अलग-अलग स्तर को पहचाना। हो सकता है कि उन्होंने माना कि राजा लोग देवताओं के सबसे सच्चे स्वरूप थे, लेकिन यह कि निम्न कोटि के लोग भी देवता के वास्तविक स्वरूप की बजाय एक तरह से दिव्य स्वरूप में थे — एक छाया।

कुछ भी हो, "परमेश्वर के स्वरूप" वाले शब्द के ये उपयोग हमें समझने में मदद करते हैं कि कैसे मूसा के मूल श्रोताओं ने उत्पत्ति में उसकी शिक्षा को ग्रहण किया होगा। वे सुझाव देते हैं कि प्राचीन श्रोताओं ने अपने देवताओं के प्राथमिक स्वरूपों के रूप में राजाओं की ओर देखा होगा क्योंकि राजाओं ने देवताओं के अधिकार और इच्छा को दर्शाया। और परिणामस्वरूप, जब उन्होंने "परमेश्वर के स्वरूप" वाले शब्द को मनुष्यों के लिए लागू होते हुए सुना, तो वे आसानी से मान सकते थे कि यह राजा के पद की बात करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब जबकि यह देखने के द्वारा कि बाइबल के समयों में झूठे देवताओं की प्रतिमाएं कैसे कार्य करते थे, हमने "परमेश्वर के स्वरूप" के पद पर विचार कर लिया है, आइए देखें कि पवित्र शास्त्र मानवता को सच्चे परमेश्वर के स्वरूपों के रूप में कैसे वर्णित करता है।

सच्चे परमेश्वर के स्वरूप

उत्पत्ति 1 हमें बताता है कि सृष्टि वाले सप्ताह के दौरान, परमेश्वर ने समस्त संसार को रचा और व्यवस्थित किया। और सप्ताह के छठवें और अंतिम कार्य दिवस पर, सृष्टि के अपने अंतिम कार्य के रूप में, उसने मानवता को रचा। उत्पत्ति 1:26 को सुनिए:

> फिर परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ, और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें" (उत्पत्ति 1:26)।

मानवता के बारे में पवित्र शास्त्र जो पहली बात कहता है वह है कि हम परमेश्वर के स्वरूप और समानता हैं। मनुष्य जाति के बारे में परमेश्वर के सोचने का यह एक प्राथमिक तरीका हैं।

> इसलिए, जब बाइबल परमेश्वर के स्वरूप और समानता में मनुष्यों के बारे में बातचीत करता है, तो वास्तव में, अनिवार्य रूप से यह कह रहा है कि वह सब कुछ जो मनुष्य है, वह सब कुछ जो मनुष्य करता है, परमेश्वर के स्वरूप को दिखाता है। और ये शब्दावली, पहला दूसरे को अनुकूल बनाता है। तो, हम परमेश्वर के स्वरूप हैं। और "समानता" शब्द आगे परिभाषित करता है कि वह क्या है। हम सटीक प्रतिलिपि नहीं हैं, हम परमेश्वर के सटीक प्रतिलिपियाँ नहीं हैं। हम परमेश्वर की समानता में हैं; इसलिए यह एक प्रतिनिधित्वात्मक गतिशीलता है, न कि उसकी कोई स्थिर प्रतिलिपि। हम जो कुछ भी हैं वह परमेश्वर के स्वरूप को दिखाता है...हम इस तथ्य को नहीं भूल सकते हैं कि मनुष्य वह आवश्यक विचार है, कि जब परमेश्वर एक ऐसा प्राणी बनाना चाहता था जो उसका प्रतिनिधित्व करे, तो उसने मानवता को बनाया।
>
> — रेव्ह. रिक रोडहीवर

सच्चे परमेश्वर के स्वरूपों के रूप में मानवता के बारे में हमारी चर्चा तीन भागों में विभाजित होगी। सबसे पहले हम स्वरूप और समानता के बारे में बाइबल वाली शब्दावली का पता लगाएंगे। दूसरा, परमेश्वर के सिद्ध स्वरूप के रूप में हम यीशु पर विचार करेंगे। और तीसरा, परमेश्वर के स्वरूप के रूप में हम अपने अधिकार का वर्णन करेंगे। आइए पहले स्वरूप और समानता की शब्दावली को देखते हैं।

शब्दावली

शब्दों के अर्थ "स्वरूप," या *ट्सेलेम* इब्रानी में, और "समानता," या *डेमुथ* इब्रानी में, समान नहीं हैं। लेकिन वे कई तरीकों से अधिव्यापन करते हैं। एक "स्वरूप" कोई खुदी हुई या ढाली गई मूर्ति हो सकती है, जैसा कि गिनती 33:52; 2 राजा 11:18; और यहेजेकेल 7:20 और 16:17 में. यह कोई मॉडल, उन सोने के चूहों के समान जिन्हें वाचा के संदूक के साथ 1 शमुएल 6:5, 11 में वापस किया गया था। और यह प्रतिबिम्ब या छाया हो सकती है, जैसा कि भजन 39:6 और भजन 73:20 में।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इसके विपरीत, "समानता" शब्द कभी भी मूर्ति की पहचान नहीं करता है। लेकिन 2 इतिहास 4:3 में यह कांस्य की बैल के जैसी मूर्तियों को संदर्भित करता है। यह 2 राजा 16:10 में एक वेदी के रेखाचित्र या योजना की भी पहचान करता है। और पूरे पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता वाले लेखों में, यह किसी एक वस्तु के रूप का या ध्वनि का दूसरी वस्तु के साथ तुलना करके वर्णन करता है। उदाहरण के लिए, यशायाह 13:4 में, पहाड़ों पर शोर एक बड़ी भीड़ के कोलाहल की *समानता* में है। और यहेजकेल 1 और 10 में परमेश्वर के रथ वाले सिहांसन के रूप का वर्णन करने के लिए यहेजकेल *समानता* शब्द का इस्तेमाल करता है जहाँ पर प्राणी हैं को विभिन्न जानवरों के जैसे लग रहे थे, और रत्नों के जैसे चमक रहे थे। और दानिय्येल 10:16 में, भविष्यद्वक्ता ने एक स्वर्गदूत संदेशवाहक के रूप में एक मनुष्य के रूप या "समानता" का वर्णन किया।

हालांकि समान नहीं है, स्वरूप और समानता के अर्थ अधिव्यापन करते हैं क्योंकि वे दोनों एक बड़ी वास्तविकता के मॉडल या रेखाचित्र का वर्णन करते हैं। इसी तरह से, मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप एवं समानता हैं क्योंकि हम परमेश्वर की शक्ति, अधिकार और भलाई को मॉडल करते हैं। एक शक के बिना, हमारी शक्ति, अधिकार और भलाई उसकी तुलना में बहुत छोटे हैं। लेकिन फिर भी वे उसकी ओर इशारा करते हैं।

अब, कई धर्मविज्ञानियों का मानना है कि जब स्वरूप और समानता का एक साथ उपयोग किया जाता है, तो उनका सामूहिक अर्थ इस अधिव्यापन की तुलना में व्यापक है। विशेष रूप से, वे तर्क देते हैं कि जबकि "स्वरूप" परमेश्वर के साथ हमारी समानता की ओर इशारा करता है, "समानता" परमेश्वर और मानवता के बीच अंतर करती है, ताकि हम गलत तरीके से यह न समझें कि हम उसके समान हैं।

उत्पत्ति 1:26 के अतिरिक्त, पुराने नियम में सिर्फ एक अन्य पद "स्वरूप" और "समानता" दोनों का उपयोग एक साथ करता है: उत्पत्ति 5:3 यहाँ पर, शेत का अपने पिता आदम का स्वरूप और समानता दोनों होना कहा गया है। बेशक, किसी पृथ्वी वाले पिता के स्वरूप और समानता में होना परमेश्वर के स्वरूप और समानता में होने से बहुत अलग है। आदम और शेत दोनों मनुष्य थे, लेकिन सिर्फ परमेश्वर ही परमेश्वर है। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 3:30 में लिखा:

> एक ही परमेश्वर है (रोमियों 3:30)।

इसी तरह के बयान हम 1 कुरिन्थियों 8:6 और याकूब 2:19 में पाते हैं।.

पवित्र शास्त्र स्पष्ट रूप से स्पष्ट करता है कि हम छोटे देवता नहीं हैं, और न ही भविष्य में हम देवता बनेंगे। तब भी जब हम नए आकाश और नई पृथ्वी में महिमा पाते हैं, हम फिर भी प्राणी मात्र रहेंगे और परमेश्वर फिर भी हमसे असीम रूप से महान होगा। फिर भी, आदम और शेत के बीच समानता हमें स्वयं को परमेश्वर की विशेषताओं के प्रतिबिंबों से अधिक देखने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

> जब हम परमेश्वर के स्वरूप में मनुष्यों के रचे जाने के बारे में सोचते हैं, तो ऐसे तरीकें हैं जिनमें हम समान हैं और ऐसे तरीकें हैं जिनमें हम समान नहीं हैं। जब यह हम दिव्य स्वरूप में होने के समान संदर्भित करता है तो जो बात याद रखनी है इसका अर्थ यह नहीं कि हम छोटे देवता हैं...दूसरे शब्दों में, हम उसके समान कुछ चीज़ों को करने में सक्षम हैं। अर्थात, हम लोग बनाने में सक्षम हैं। हम लोग शून्य में से सृष्टि नहीं कर सकते, लेकिन जब कभी भी हम मनुष्यों को रचनात्मक एजेंट बनता देखते हैं, तो यह दिव्य स्वरूप का प्रतिबिंब होता है। हम नैतिक एजेंट भी हैं। यह तथ्य कि हम चुनावों को पैदा करने में सक्षम हैं, हम उसे चुन सकते हैं जो कि माना जाता है कि वह सही है उसके विपरीत जो गलत है; यह तथ्य कि हमारे पास नैतिक एजेंट होने की क्षमता है दिव्य स्वरूप का भी प्रतिबिंब है। और

> यह तथ्य कि हम परमेश्वर के विचारों के अनुसार सोचने और परमात्मा का चिंतन में सक्षम हैं, ये सभी वे तरीकें हैं जिनमें हम उसके जैसे हैं।
>
> — डॉ. केन कीथले

धर्मविज्ञानियों ने स्वरूप और समानता की बाइबल वाली शब्दावली से कई प्रकार के सिद्धांतों को प्रतिपादित किया है। कुछ परमेश्वर की सृष्टि के ऊपर हमारे अधिकार पर ध्यान-केंद्रित करते हैं। अन्य हमारे द्वारा किए जाने वाले वास्तविक कार्य के बारे में बात करते हैं। और अन्य इस तथ्य पर जोर देते हैं कि हम परमेश्वर के कई गुणों का उन तरीकों से साझा करते हैं जो हमें जानवरों से अलग करते हैं। और ये सभी दृष्टिकोण सही हैं। हम परमेश्वर के स्वरूप और समानता हैं क्योंकि हम पृथ्वी पर परमेश्वर के सेवक राजा के रूप में शासन करते हैं, और अपने कर्तव्यों को निभाने के लिए आवश्यक गुणों और क्षमताओं से संपन्न किए गए हैं।

स्वरूप और समानता की शब्दावली के संदर्भ में सच्चे परमेश्वर के स्वरूप के रूप में अपने पद पर विचार करने के बाद, आइए अपने आदर्श उदाहरण के रूप में यीशु की ओर मुड़ते हैं।

यीशु

परमेश्वर का देहधारण के रूप में, यीशु एकमात्र ऐसा सिद्ध मनुष्य है जो कभी भी रहा है। वह पूर्णतः पापरहित है, और अपने सभी मानवीय गुणों में पूरी तरह से सिद्ध है। इसके अलावा, मसीहा या ख्रिष्ट के रूप में, वह परमेश्वर के राज्य के ऊपर मानव राजा भी है। और बेशक, किसी भी अन्य मनुष्य से ज्यादा परमेश्वर की विशेष उपस्थिति उसमें वास करती है, क्योंकि वह स्वयं परमेश्वर है। इसलिए, परमेश्वर के स्वरूप के बारे में हम कैसी भी कल्पना क्यों न करें, हमें सिद्ध उदाहरण के रूप में कि वह स्वरूप कैसा होना चाहिए यीशु को देखना चाहिए।

2 कुरिन्थियों 4:4-5 में, प्रेरित पौलुस ने लिखा:

> अविश्वासियों...अर्थात मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके। क्योंकि हम अपने को नहीं,परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं कि वह प्रभु है, और अपने विषय में यह कहते हैं कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं (2 कुरिन्थियों 4:4-5)।

इस अनच्छेद में, पौलुस ने यीशु की पहचान उस तरीके में परमेश्वर के स्वरूप के रूप में की है जो उसे अन्य सभी मनुष्यों से अलग करती है। सबसे पहले, उसने परमेश्वर के स्वरूप को परमेश्वर के समान यीशु के दिव्य महिमा के साथ जोड़ा। और दूसरा, उसने प्रभु या राजा वाले यीशु के मानवीय पद पर प्रकाश डाला है।

परमेश्वर के सिद्ध स्वरूप के रूप में, यीशु ने दिव्य महिमा को उस तरीके में दर्शाया जैसा कोई प्राणी मात्र नहीं कर सकता है। हां कुलुस्सियों 2:9 में, पौलुस ने सिखाया कि मसीह में परमेश्वर ने पूर्ण रीति से वास किया, कुछ भी नहीं छोड़ा, जिससे कि मसीह में परमेश्वर के सभी गुण उपस्थित और प्रकट हैं। और परिणामस्वरूप, जब यीशु अपनी महिमा प्रकट करता है — आमतौर पर एक महान ज्योति के रूप में दिखाई देता है — वह दृश्यमान रूप से प्रतिनिधित्व करता है हमारेत्रिएक परमेश्वर का। लेकिन उसकी महिमा का प्रकाशन इससे कहीं अधिक गहरा है। परमेश्वर की महिमा में उसके निहित मूल्य, उसकी प्रतिष्ठा, और उसको प्राप्त प्रशंसा शामिल है। और ये सभी बातें मसीह में परमेश्वर के लिए भी सत्य हैं। जैसा कि इब्रानियों का लेखक इब्रानियों 1:3 में कहता है:

> पुत्र परमेश्वर की महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है (इब्रानियों 1:3)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

और जैसा कि यीशु ने स्वयं इसको यूहन्ना 14:9 में कहा है:

> जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है (यूहन्ना 14:9)।

पौलुस ने भी कहा कि यीशु परमेश्वर का आदर्श स्वरूप है क्योंकि वह प्रभु है। "प्रभु" शब्द इस तथ्य को संदर्भित करता है कि यीशु वह राजा है जो सृष्टि के ऊपर परमेश्वर के शासन को सिद्धता के साथ लागू करता है। परमेश्वर के उप-राज्य-प्रतिनिधि या दास राजा के रूप में, उत्पत्ति 1:26-28 में पूरी मानवता को इस कार्य के साथ प्रभारित किया गया था। लेकिन छुड़ाये गई मानवता के ऊपर राजा के रूप में, और परमेश्वर की व्यवस्था के दोषरहित रखवाले के रूप में, यीशु इस पद को सिद्धता के साथ पूरा करता है। सुनिए कैसे पौलुस ने परमेश्वर के स्वरूप के रूप में यीशु की महिमा और राजा होने का वर्णन किया कुलुस्सियों 1:13-18में:

> [पिता] ने हमें ...अपने प्रिय पुत्र के राज्य में कराया...वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएँ, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार, सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई है...और वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है; वही आदि और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे (कुलुस्सियों 1:13-18)।

यीशु परमेश्वर का स्वरूप है क्योंकि हर क्षेत्र में उसका वर्चस्व है। वह अपने स्वयं के राज्य का राजा है। वह सृष्टि के ऊपर पहिलौठा है, अर्थात, उसके पास सृष्टि के ऊपर विरासत का पूरा अधिकार है। वह अन्य सभी शक्तियों का सृष्टिकर्ता है जिसका अर्थ है कि उसका अपना अधिकार उनके अधिकार से महान है। वह कलीसिया का मुखिया या शासक है, और उसके पास पहले पुनर्जीवित और महिमा पाए मनुष्य होने का गौरव है। इन सभी तरीकों में, यीशु परमेश्वर की शक्ति और महिमा का सिद्ध प्रतिनिधित्व है, और जब मनुष्य के माध्यम से व्यक्त किया जाता है तो परमेश्वर का राजा होना और अधिकार कैसा दिखाई देता है वह उसका सिद्ध उदाहरण है।

> यीशु परमेश्वर का सिद्ध स्वरूप है। यीशु दूसरा आदम है, जैसा कि हम 1 कुरिन्थियों 15:45 में पढ़ते हैं, "अंतिम आदम," जो स्वयं में परमेश्वर की सामर्थ्य था। और यीशु की पूर्णता में परमेश्वर की असाधारण शक्ति का प्रदर्शन किया गया था क्योंकि वह एक ऐसा मनुष्य बना जिसने पाप नहीं किया, ऐसा मनुष्य जो पाप से पैदा नहीं हुआ था। यदि हम मत्ती 1:19 और 20 में देखें, तो हम देखते हैं कि यीशु की आत्मा यूसुफ या मरियम या आदम की वंशावली से नहीं आई, लेकिन पवित्र आत्मा से। इसलिए, चाहे उसने मानव शरीर और लहू को पहना था, उसका जीवन एक ऐसा जीवन थी जो भीतर से सिद्ध था; उसकी पवित्रता भीतर से सिद्ध थी। और यीशु परमेश्वर का सिद्ध स्वरूप था क्योंकि वह पाप में नहीं गिरा था, चाहे भले ही उसने एक मनुष्य के रूप में कमजोरियों को महसूस किया — इब्रानियों 4:15 — लेकिन उसने पाप नहीं किया। उसने अपने विचारों में पाप नहीं किया; उसने अपनी बोली में पाप नहीं किया; उसने अपने कार्यों में पाप नहीं किया। अपने पूरे जीवन भर, इस संसार में परमेश्वर के मनुष्य के रूप में जब तक उसने अपने कार्य को पूरा नहीं कर लिया, उसने पाप नहीं किया। यही परमेश्वर का सिद्ध स्वरूप है; यही सिद्ध जीवन का यीशु मसीह के द्वारा पेश किया गया उदाहरण है।

— योहनेस प्रैप्टोवॉरसो, Ph.D., अनुवादित

कोई भी अन्य मनुष्य परमेश्वर का प्रतिनिधित्व इतनी सिद्धता से नहीं कर सकता जैसे यीशु करता है। फिर भी, हम अभी भी परमेश्वर के पूर्ण स्वरूप हैं, और केवल छाया नहीं हैं जैसा कि असीरिया के लोग विश्वास करते थे। हम अभी भी उसकी ओर से शासन करते, उसकी इच्छा को पूरा करते और उसकी महिमा को प्रतिबिंबित करते हैं। हम इन बातों को इतनी अच्छी तरह से नहीं करते जैसा यीशु करता है लेकिन फिर भी हम उन्हें करते हैं। और इसीलिए 1 कुरिन्थियों 11:7 में, पौलुस यह कह पाया:

> मनुष्य...परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है (1 कुरिन्थियों 11:7)।

अभी तक, हमने स्वरूप और समानता की शब्दावली की जाँच, और परमेश्वर के सबसे सिद्ध स्वरूप के रूप में यीशु पर ध्यान-केंद्रित करने के द्वारा, सच्चे परमेश्वर के स्वरूपों के रूप में अपने पद पर चर्चा की है। आइए अब अपने अधिकार को देखें।

अधिकार

जब पवित्र शास्त्र मानवता को परमेश्वर के स्वरूप के रूप में पहिचानता है, तो यह स्वरूप के रूप में हमारी भूमिका को पृथ्वी के ऊपर हमें दिए गए अधिकार के साथ जोड़ता है। यह पूरी तरह से प्राचीन मध्य-पूर्वी विचार के अनुरूप है कि राजा उनके देवताओं के सर्वोच्च स्वरूप थे क्योंकि उन्होंने उनकी ओर से शासन किया। लेकिन पवित्र शास्त्र इस अधिकार और पद का विस्तार मात्र राजाओं से भी अधिक करता है। सभी मनुष्य — नर और नारी, यूवा और बुज़ुर्ग, शाही और आम — परमेश्वर के vice-regents, या दास राजा हैं, जिनका काम यह सुनिश्चित करना है कि उसकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो। मानवता को रचने का परमेश्वर का यही कारण था, और एक बार जब हम रच दिए गए तो यह वह भूमिका थी जिसे उसने हमें सौंपा था। उत्पत्ति 1:27-28 को एक बार फिर से सुनिए:

> परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। परमेश्वर ने उनको आशीष दी और उनसे कहा, "फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो। और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो" (उत्पत्ति 1:27-28)।

जैसा कि यह अनुच्छेद दर्शाता है, परमेश्वर से जो अधिकार हमने प्राप्त किए उसके कम से कम तीन पहलू हैं: हम पृथ्वी को परमेश्वर के स्वरूप से भरने के लिए, पृथ्वी के सभी प्राणियों पर शासन करने, और स्वयं पृथ्वी को वश में करने के लिए अधिकृत हैं।

अपनी संख्या को बढ़ाने के द्वारा हम पृथ्वी को भरते हैं, जिसके कारण हम दुनिया भर में उसके जीवित स्वरूपों को पैदा करते हैं। इसका अर्थ है कि अपने साथ परमेश्वर के प्रतिनिधित्व वाली उपस्थिति को ले जा कर और हर जगह मानव संस्कृति को स्थापित कर हम दुनिया के सभी हिस्सों में रह सकते हैं और हमें रहना चाहिए। हम सभी पृथ्वी के प्राणियों को विभिन्न तरीकों से नियंत्रित करते हैं, जिनमें शामिल है उन्हें पालतू बनाना, उनके आवासों का प्रबंधन करना और दुर्व्यवहार से उनकी रक्षा करना। और हम कृषि और प्राकृतिक संसाधनों के समझदारी वाले प्रबंधन जैसे कार्यों के माध्यम से इसे एक जंगल से सुंदर, जीवन-दायक वाटिका में बदल कर स्वयं पृथ्वी को वश में करते हैं। वास्तव में, वह आम विचार जिसे हम उत्पत्ति 1 और 2 में पढ़ते हैं वह है कि मानवता से अपेक्षा की गई थी कि वह अदन की वाटिका की सीमाओं का विस्तार करे जब तक कि पूरा ग्रह परमेश्वर के निवास के लिए एक उपयुक्त आवास नहीं

बनाया जाता। अंतिम लक्ष्य परमेश्वर की विशेष उपस्थिति के लिए था कि वह पूरी पृथ्वी को उस रीति से भर दे जैसे उसने मूल रूप अदन की वाटिका को भरा था।

परमेश्वर के स्वरूप के रूप में हमारी भूमिका या पद सभी मानवता को राजशाही के स्तर तक ऊपर उठाती है। परमेश्वर ने हमें पूरी पृथ्वी पर अपना शासन चलाने का काम सौंपा है। और वह पद हमें बहुत बड़ी गरिमा प्रदान करता है। हम सब राजा और रानियाँ हैं। और हमें एक दूसरे के साथ उचित मात्रा में सम्मान और अनुग्रह का व्यवहार करना चाहिए।

> उत्पत्ति 1 स्पष्ट करती है कि आदम और हव्वा — या मानवता — को परमेश्वर के स्वरूप में उसकी समानता के अनुसार रचा गया है। और जबकि उसका अर्थ क्या है इसके कई पहलू हैं, वहाँ निश्चित रूप से उत्पत्ति 1 में यह धारणा निहित है, कुछ हद तक उत्पत्ति 5 में भी स्पष्ट है, कि परमेश्वर के बच्चे बनने के लिए सृजा जाना, परमेश्वर के स्वरूप में आदम और हव्वा के बनाए जाने के अर्थ का एक पहलू है। और बाकी रची गई सृष्टि के बीच इस गौरवान्वित हैसियत का होना वह असाधारण विशेषाधिकार और गरिमा है कि मानवता परमेश्वर के बच्चों के समान उसके साथ विशेष संबंध में है। हम परमेश्वर के शाही बेटे और बेटियां हैं, और इतने महान और असाधारण गरिमा और विशेषाधिकार के पद के साथ-साथ कितनी बड़ी जिम्मेदारी भी है।
>
> — रेव्ह. बिल बर्न्स

परमेश्वर के दास राजाओं के रूप में जो गरिमा और सम्मान हमने प्राप्त किया उसे पहचानते हुए, हमें याद रखने की जरूरत है कि परमेश्वर अभी भी हमारे ऊपर महान अधिकार है। हम अभी भी सभी बातों में उसके प्रति जवाबदेह हैं। वह सृष्टिकर्ता है; हम उसके जीव हैं। वह परमेश्वर है; हम नहीं। और हम केवल इसलिए अधिकार रखते हैं क्योंकि वह इसे हमें प्रदान करता है। इसलिए, हमें बडी श्रद्धा और विनम्रता के साथ उस सौंपे गए अधिकार का प्रयोग करना चाहिए।

> यह महत्वपूर्ण है कि हम यह समझें कि परमेश्वर के स्वरूप में बनाए जाने का अर्थ क्या है। परमेश्वर के स्वरूप में बनाया जाना वास्तव में यह है कि हम उसकी समानता में बनाए गए हैं और हमारे पास शक्ति है, और शक्ति केअलावा, हम परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं। हम जिम्मेदार एजेंट हैं, और हम परमेश्वर के संबंध में संबंधपरक हैं, लेकिन अपने पड़ौसियों के संबंध में भी संबंधपरक हैं। परमेश्वर के शासन के प्रति समर्पण करने की हमारी जरूरत है कि हमें परमेश्वर के इच्छित उद्देश्य के अनुसार जीने की कोशिश करनी है...लेकिन हमने परमेश्वर के खिलाफ़ पाप किया है, और हमें इस संबंध को — जो पहले तोड़ा जा चुका है — फिर से बनाने की जरूरत है। इसलिए, परमेश्वर के शासन के प्रति समर्पण का अर्थ है कि यह ऐसा करने से है कि हम समाज में परमेश्वर को प्रतिबिंबित करने में सक्षम होंगे।
>
> — रेव्ह. कैनन अल्फ्रेड सेबाहेन, Ph.D.

पृथ्वी के ऊपर हमारा शासन सदैव हमारे महान परमेश्वर और राजा की इच्छा के अधीन है। इसलिए, हमारे पद में उसके स्वरूप के रूप में, हमें कभी भी अपनी इच्छा को थोपने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इसके विपरीत, हमें परमेश्वर की इच्छा को पृथ्वी पर पूरा होता देखने के लिए कार्य करना

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

चाहिए जैसे कि वह स्वर्ग में पूरी होती है। और हमें वह इस रीति से करना चाहिए जो सारी महिमा उसे प्रदान करे।

अब जबकि हमने हमारे द्वारा धारण पद या स्थिति का पता लगाने के द्वारा परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मानवता पर विचार कर लिया है, आइए उन गुणों की ओर देखते हैं जो परमेश्वर ने हमें उस भूमिका में सशक्त बनाने के लिए दिए हैं।

गुण

व्यवस्थित ईश्वरीय-ज्ञान ने पारंपरिक रूप से सिखाया है कि परमेश्वर का स्वरूप मानवता में उन विभिन्न गुणों के माध्यम से देखा जा सकता है जिन्हें वह हमारे साथ साझा करता है। हम पहले ही देख चुके हैं हमारा पद परमेश्वर के समान है। वह सर्वोच्च सम्राट है, और हम दास राजा हैं जिन्हें उसने सृष्टि के ऊपर अपनी ओर से शासन करने के लिए नियुक्त किया है। लेकिन हमारे पास कई गुण भी हैं जो उसके गुणों के सदृश्य हैं। उदाहरण के लिए, हम सोच सकते हैं और तर्क-वितर्क कर और योजना बना सकते हैं। हम नैतिक निर्णय लेते हैं। और हमारे पास अमर आत्माएँ हैं। अब, परमेश्वर के गुण असीम रूप से हमारे गुणों की तुलना में ज्यादा बड़े और ज्यादा सिद्ध हैं। लेकिन उसके स्वरूपों के रूप में, हम अभी भी उस के साथ इन तरीकों में मिलते जुलते हैं।

हम गुणों की उन तीन श्रेणियों पर ध्यान-केंद्रित करेंगे जिन्हें मनुष्य परमेश्वर के साथ साझा करता है। सबसे पहले, हम अपने नैतिक गुणों को देखेंगे। दूसरा, हम अपने बौद्धिक क्षमताओं पर विचार करेंगे। और तीसरा, हम अपने आत्मिक गुणों की जाँच करेंगे। आइए अपने नैतिक पहलूओं के साथ शुरु करते हैं।

नैतिक

“नैतिक” शब्द सही और भले और बुरे और गलत के बीच अंतर करने की हमारी योग्यता को संदर्भित करता है। पवित्र शास्त्र के संबंध में, “सही” और “भला” उन अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के रूप में पहचाने जाते हैं जिन्हें परमेश्वर अनुमोदित एवं आशीषित करता है। और “गलत” एवं “बुराई” ऐसी अवधारणाएँ, व्यवहार, और भावनाएँ हैं जिन्हें वह निषेध करता और दंड देता है। और क्योंकि हम परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं, इसलिए हमें इन बातों में उसके परिप्रेक्ष्य में अंतर्दृष्टि दी गई है। यह सत्य है कि मानवता के पाप में गिरने के कारण हमारा नैतिक निर्णय क्षतिग्रस्त हो गया है। लेकिन यह पूरी तरह से नष्ट नहीं हुआ है। इसके अलावा, विश्वासियों के लिए, यह पुनःस्थापित होने की प्रक्रिया में है।

अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के नैतिक गुणों पर विचार कीजिए। जब परमेश्वर ने मानवता को अदन की वाचिका में रखा, उन्होंने समझ गए कि उन्हें उसमें कार्य करना और उसकी देखभाल करनी थी, जैसा कि परमेश्वर ने उत्पत्ति 2:15 में कहा है। और उन्होंने उन दायित्वों को नैतिक रूप से अच्छा माना। लेकिन वे यह भी समझ गए थे कि उन्हें भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से खाना नहीं था क्योंकि उत्पत्ति 2:17 में इसे मना किया था। कभी-कभी मसीही लोग यह सोचने की गलती करते हैं कि आदम और हव्वा को वृक्ष में से खाने से पहले सही और गलत की जानकारी नहीं थी। लेकिन यह साफ है कि यह विचार गलत है। आखीरकार, उत्पत्ति 3:2 और 3 में, हव्वा सर्प को यह बताने में सक्षम थी कि उसे क्या करने की अनुमति थी और क्या करने से उसे मना किया गया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आदम और हव्वा ने निषिद्ध फल खाने के बाद निश्चित रूप से ज्ञान को प्राप्त किया। लेकिन पवित्र शास्त्र ने नैतिक निर्णय के संदर्भ में इसका वर्णन नहीं किया है। जैसा कि हम उत्पत्ति 3:7 में पढ़ते हैं:

> तब उन दोनों की आँखें खुल गई, और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे हैं (उत्पत्ति 3:7)।

यहाँ पर "नंगा" शब्द का अर्थ न केवल नंगेपन को इंगित करता है लेकिन शर्म और भेद्यता को भी। यह वही शब्द है जिसका प्रयोग यशायाह 47:3 में किया गया है, जहाँ परमेश्वर ने कहा:

> तेरी नग्नता उघाड़ी जाएगी और तेरी लज्जा प्रगट होगी। मैं बदला लूँगा; और किसी मनुष्य को न छोड़ूँगा (यशायाह 47:3)।

निषिद्ध फल के खाने ने आदम और हव्वा के ज्ञान को, उनकी कमजोरी को उजागर करने के द्वारा बड़ाया। जब वे आज्ञाकारी और परमेश्वर के भले अनुग्रह में सुरक्षित थे, कोई भी उनको न डरा सकता या हानि पहुँचा सकता था। लेकिन उन्होंने ऐहसास नहीं किया कि उनकी सफलता और सुरक्षा को पूर्णतः परमेश्वर के द्वारा दी गई थी, और केवल इसलिए क्योंकि वह उनपर अनुग्रहकारी था। इसलिए, उन्होंने यह भी ऐहसास नहीं किया कि जब वे पाप करेंगे, तो वे उसके प्रावधान और सुरक्षा को खो देंगे। लेकिन जैसे ही उन्होंने खाया, ये बातें स्पष्ट हो गई। उन्होंने बुराई से अच्छाई को अंतर करने के बारे में नहीं सीखा, लेकिन उन्होंने दोनों के अनुभव और परिणामों के बारे में ज्यादा सीखा। वास्तव में, जब मानवता के नैतिक योग्यताओं के बारे में बात होती है, पाप में हमारे गिरने ने वास्तव में हमारे नैतिक निर्णय को कम कर दिया। जैसा कि पौलुस ने तीतुस 1:15 में कहा:

> पर अशुद्ध और अविश्वासियों के लिए कुछ भी शुद्ध नहीं। वरन, उनकी बुद्धि और विवेक दोनों अशुद्ध हैं। (तीतुस 1:15)।

क्योंकि हमारी बुद्धि और विवेक भ्रष्ट हो गए हैं, पाप में गिरा हुआ मनुष्य अच्छे और बुरे का सही तरीके से मूल्यांकन नहीं कर सकता है। इस मायने में, हम परमेश्वर के खराब स्वरूप बन गए हैं। लेकिन बुरा समाचार वहीं नहीं खत्म होता है। हमने नैतिक तरीकों से व्यवहार करने की क्षमता भी खो दी है — ऐसे कार्य करना जो परमेश्वर को भाते हों। जैसा कि पौलुस ने अविश्वासियों के बारे में तीतुस 1:16 में आगे कहा है:

> वे कहते हैं, कि हम परमेश्वर को जानते हैं, पर अपने कामों से उसका इन्कार करते हैं। क्योंकि वे घृणित और आज्ञा न मानने वाले हैं और किसी अच्छे काम के योग्य नहीं (तीतुस 1:16)।

और रोमियों 8:7-8 में उसने जोड़ा:

> पापमय मन परमेश्वर से बैर रखना है। क्योंकि न तो वह परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है। जो पापमय स्वभाव के द्वारा नियंत्रित होते है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते (रोमियों 8:7-8)।

हम पूरे पवित्र शास्त्र में ऐसे ही विचार पाते हैं, जिनमें शामिल है लूका 6:43-45; यूहन्ना 15:4, 5; और इब्रानियों 11:6।

> मानवता के पाप में गिरने का मनुष्यों के रूप में आज हमारी नौतिक क्षमता पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आप पहले ही स्वयं उत्पत्ति 3 में इसका एक महत्वपूर्ण पहलू

> कहानी में देख सकते हैं। आदम और हव्वा के पाप करने के बाद, वे क्या करते हैं? वे परमेश्वर से छिप जाते हैं। वे जिम्मेदारी से बचने की कोशिश करते हैं। आप पहले ही पाप के प्रभावों को वहाँ देखते हैं। आप उत्पत्ति 4 में पढ़ना जारी रखते हैं और एकदम से कैन और हाबिल की कहानी पर आते हैं और हम पाप की विनाशलीला को देखते हैं जब कैन अपने भाई की हत्या करता है। और फिर कैन के वंशजों की कहानी जो उससे आते थे और वह घमंड और अहंकार जो मानवता को चिन्हित करता है। और इसलिए, वास्तव में, यदि हमें सिर्फ उत्पत्ति में कहानी को पढ़ना हैं तो यह हमें संकेत देता है कि आदम के पाप का कितना गहरा प्रभाव था। और फिर जब हम पवित्र शास्त्र में आगे बढ़ते हैं तो उस पर हम कुछ ईश्वरीय-ज्ञान वाले विचारों को भी पाते हैं। यदि आप भजन 51 के बारे में सोचते हैं, जो दाऊद के अंगीकार का प्रसिद्ध भजन है, वह कहता है कि वह उस समय से पापी जब उसकी माँ ने उसे गर्भ में धारण किया। आप जानते हैं, वहाँ पर दाऊद ने हमारी पापमयता को हमारे अस्तित्व की शरुआत में वापस ले जाता है। यह ऐसा कुछ नहीं था जिसे हमने बाद में बुरे सांस्कृतिक प्रभावों या किसी चीज़ के माध्यम से सीखा। यह ऐसा है जिसकी जड़े बहुत गहराई तक है...और इसका सबसे परिपक्व और पूर्ण शिक्षण नए नियम में आता है...उदाहरण के लिए, हम पौलुस को शिक्षा देते हुए पाते हैं, कि कैसे जो आत्मा के बिना है परमेश्वर की आत्मा की बातों को समझने में सक्षम नहीं हैं — यह 1 कुरिन्थियों 2 में है। रोमियों 8 इस बारे में कहता हैै कि जो शरीर का दशा में है, जो कि मसीह से दूर हम सब हैं, कैसे हम उन बातों को नहीं कर पाते हैं जो परमेश्वर को प्रसन्न करती हैं...हममें परमेश्वर के उस पुनर्जन्म देने वाले अनुग्रह से हट कर अपने पापों से मुड़ने और परमेश्वर की दृष्टि में उसको प्रसन्न करने वाले कार्य करने की यह पूर्ण अयोग्यता है।
>
> — डॉ. डेविड वैनड्यूनन

कुछ ईश्वरीय-ज्ञान वाली परंपराओं में, — हमारी मूल धार्मिकता और पवित्रता के साथ-साथ — हमारी नौतिक क्षमता की हानि को इतना बड़ा माना जाता है जैसे कि हम परमेश्वर के स्वरूप और समानता को पूरी तरह से खो चुके हैं। लेकिन पवित्र शास्त्र फिर भी पापमय मानवता को परमेश्वर के स्वरूप और समानता के जैसा संदर्भित करता है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 9:6 हत्या को निंदा करता है क्योंकि मनुष्य अभी भी परमेश्वर के स्वरूप हैं। और याकूब 3:9 लोगों को शापित करने की निंदा करता हैं क्योंकि हम सब परमेश्वर की समानता में बनाए गए हैं। इसलिए, ज्यादातर ईश्वरीय-ज्ञान वाली परंपराओं ने माना है कि मानवता में परमेश्वर का स्वरूप और समानता भ्रष्ट हो गई लेकिन नष्ट नहीं हुई।

किसी भी स्थिति में, सभी सुसमाचारीय लोग सहमत हैं कि पाप में मानवता के गिरने ने हमारे नैतिक गुणों को भ्रष्ट किया। लेकिन विश्वासियों के लिए शुभ संदेश है: जब हम मसीह में विश्वास करते हैं, तो परमेश्वर हममें अपने स्वरूप के इस पहलू का नवीनीकरण और पुनर्स्थापन शुरू कर देता है। जैसा कि पौलुस ने इफिसियों 4:24 में लिखा, विश्वासियों को:

> नए मनुष्यत्व को पहिन लो जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है (इफिसियों 4:24)।

जिस “नए मनुष्यत्व” का वर्णन पौलुस ने किया उसमें हमारे अस्तित्व का हर पहलू शामिल हैं, जिसमें शामिल है हमारे नैतिक निर्णय और उन कार्यों को करने की हमारी योग्यता जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं। हमारा ज्ञान, हमारी धार्मिकता और हमारी पवित्रता सभी को मसीह में पुनर्स्थापित किया जा रहा

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

है। और यह पुनर्स्थापन हमें और ज्यादा "परमेश्वर के समान," बना रहा है ताकि हम उसके स्पष्ट स्वरूप बन जायें।

हमारे नैतिक गुणों की इस समझ को ध्यान में रखकर, आइए हमारी बौद्धिक योग्यताओं की ओर मुड़ते हैं।

बौद्धिक

> मानवता के, परमेश्वर के स्वरूप वाले सिद्धांत, को अकसर दो कारणों के लिए मनुष्यों की बौद्धिक शक्ति के साथ जोड़ा जाता है। ध्यान करने वाली पहली बात है, कि हालांकि, मानवता के पाप में गिरने के कारण, परमेश्वर का स्वरूप जबकि बुरी तरह से बिगड़ गया, तौभी यह पूरी तरह से नष्ट नहीं हुआ, और इसलिए हमारे भीतर आज भी परमेश्वर का स्वरूप बना हुआ है, जिसे हम अपने अस्तित्व में लिए फिरते हैं। और शायद हमारे लिए उसे समझने का सबसे अच्छा तरीका है कि यह समझने का विचार कि हम कैसे सोचते हैं और बौद्धिक रीति से कैसे व्यवहार कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, पाप में गिरने के बावजूद, मनुष्यों के पास जो सही है और जो गलत है, उसके बीच अंतर करने की उनकी योग्यता में सुसंगत सोच के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता है। और यह इस तथ्य से बहुत स्पष्ट रूप से बात करता है कि हम परमेश्वर की व्यवस्था के साथ रचे गए हैं, परमेश्वर की व्यवस्था का ज्ञान हमारे अस्तित्व, हमारे दिमागों और हमारे विवेक में डाला गया है। और इसलिए, प्रेरित पौलुस इस बारे में बात करते हैं, कि इस तथ्य के बावजूद कि यहूदियों के समान अन्यजातियों को परमेश्वर की व्यवस्था नहीं दी गई थी, उनके पास स्वयं के स्वभाव के द्वारा — हम सभी के पास अपने स्वभाव से — हमारे विवेक में परमेश्वर का ज्ञान डाला गया है और इस कारण हम बौद्धिक निर्णय लेने में सक्षम हैं।
>
> — डॉ. जे हाले

कलीसियाई इतिहास में बहुत पहले से, मसीही लोगों ने समझा है कि मनुष्यों में परमेश्वर के स्वरूप में बौद्धिक रीति से सोचने और जटिल भावनाओं को संसाधित करने की हमारी क्षमता शामिल है। हम उत्पत्ति 2:19, 20 में अदन की वाटिका में मानवता की बौद्धिक क्षमता के महत्व को देख सकते हैं। इन पदों में, आदम ने जानवरों को उचित नाम देने और पृथ्वी को भरने एवं वश में करने कीउनकी उपयुक्तता का मूल्यांकन करने के लिए परमेश्वर के स्वरूप के रूप में अपने अधिकार का प्रयोग किया।

इस बौद्धिक क्षमता में से कुछ पाप में हमारे गिरने में खो गया था, जैसा कि कई बाइबल के अनुच्छेदों में स्पष्ट है जो मनुष्यों के बुद्धिहीन और यहाँ तक कि कई बार पागल होने के बारे में बोलते हैं, जैसे कि सबोपदेशक 9:3 और यिर्मयाह 17:9। और दूसरे अनुच्छेद हमारे द्वारा उन बातों को समझने की क्षमता को खो देने के बारे में बोलते हैं जो परमेश्वर हमें दिखाता और हमसे कहता है। उदाहरण के लिए, हम इसे व्यवस्थाविवरण 29:2, 3 में देखते हैं, जहाँ इस्राएलियों का मन उन चमत्कारों के महत्व को नहीं समझ सका जो परमेश्वर ने उनके लिए किए थे। और यूहन्ना 8:43-47 में, यीशु ने समझाया कि अविश्वासी शैतान की सन्तान थे, जो कि झूठ का पिता है। और परिणामस्वरूप, वे झूठ पर विश्वास करते हैं और सत्य को स्वीकार करने में असमर्थ हैं। और इफिसियों 4:17-18 में पौलुस ने जो लिखा उसे सुनिए:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> अन्यजाति लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर [चलते] हैं। क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है, और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं (इफिसियों 4:17-18)।

पाप में हमारे गिरने ने परमेश्वर के दृष्टिकोण से संसार के बारे में सोचने और समझने की हमारी क्षमता को नुकसान पहुँचाया। लेकिन इसने इसको पूरी तरह से नष्ट नहीं किया। हमारे पास अभी भी बौद्धिक एवं भावनात्मक क्षमताएं हैं, चाहे भले ही वे उतने अच्छी रीति से कार्य न करते हों जैसा कभी करते थे। उदाहरण के लिए, जैसा कि हम रोमियों 1:19, 20 में सीखते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व जानने के लिए, और उसके अदृश्य गुणों और दिव्य स्वभाव के विशेष पहलूओं को पहचानने के लिए अविश्वासियों के पास भी बौद्धिक क्षमता है।

जॉन कॉल्विन ने, जो कि 1509 से 1564 में रहे थे, अपनी पुस्तक *इंस्टिटचूट्स ऑफ क्रिश्चियन रिलीजन* में पाप में गिरे मनुष्य की क्षमताओं, और अविश्वासी मानवता का बौद्धिक रीति से सोचने का बचाव किया है। पुस्तक 2, अध्याय 2, भाग 15 में उन्होंने लिखा:

> उनमें प्रदर्शित सत्य के सराहनीय प्रकाश को हमें याद दिलाना चाहिए, कि मानवीय बुद्धि, अपने मूल अखंडता से चाहे कितनी भी गिरी हुई और भ्रष्ट क्यों न हो, उसको अभी भी उसके सृष्टिकर्ता से उत्कृष्ट उपहारों के साथ सँवारा एवं निवेशित किया जाता है। यदि हम सोचें कि केवल परमेश्वर का आत्मा ही सत्य का सोता है, तो हम सावधान रहेंगे, क्योंकि जहाँ भी सत्य प्रकट होता है तो हम उसका अपमान, उसको अस्वीकार या निंदा करने से बचेंगे।

और विश्वासियों के लिए और भी अच्छी खबर है। जैसा कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 2:11-16 में सिखाया है, कि, परमेश्वर ने हमें अपना पवित्र आत्मा और मसीह की बुद्धि दी है ताकि हम वास्तविकता को एक बार फिर उसी रीति से समझ सकें जैसे परमेश्वर समझता है। इससे बढ़कर, पौलुस ने कुलुस्सियों को बताता कि हमारी बौद्धिक योग्याताओं की पुनर्स्थापन परमेश्वर के स्वरूप का एक ऐसा पहलू है जो हम में नवीनीकृत किया जा रहा है। जैसा कि हम कुलुस्सियों 3:10 में पढ़ते हैं:

> नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है, जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है। (कुलुस्सियों 3:10)।

मूल रूप से परमेश्वर के स्वरूप में ऐसा ज्ञान शामिल था जो कि पवित्र और निर्दोष था। लेकिन, जैसा कि हमने कहा है, हमारा ज्ञान मानवता के पाप में गिरने के द्वारा भ्रष्ट हो गया था। जब हम मसीह में विश्वास करते हैं, तो परमेश्वर हममें अपने स्वरूप के इस पहलू का पुनर्स्थापन शुरू कर देता है। परिणामस्वरूप, हम और अधिक सही तरीके से सोचने एवं समझने में सक्षम होते हैं, जिससे कि हमारे विचार और तर्क उसके साथ अधिक मेल खाते हैं।

> उद्धार में पवित्र आत्मा के कार्य के बारे में सबसे असाधारण बातोें में से एक है कि पवित्र आत्मा मनुष्य की बौद्धिक क्षमता, जो कि पहले क्षतिग्रस्त, पाप में गिर हुआ, पाप से प्रदूषित हो गया था उसको वापस बचाता है और फिर से मरम्मत करता है। और पवित्र आत्मा परमेश्वर की आत्मा के रूप में काम करता है जो उस क्षमता को एक बार फिर से उत्तेजित, मरम्मत, सिद्ध करता है। इसलिए जब क्रूस के बारे में , मसीह के बारे में उद्घोषणा में परमेश्वर का अनुग्रह मनुष्य के जीवन में आता है, तो मनुष्य दोबारा ठीक से प्रतिक्रिया देना और यीशु को प्रभु और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लेना शुरू कर सकता है। और यहाँ तक कि उसके बाद भी पवित्र आत्मा समझ की आत्मा के रूप में कार्य करता है, ऐसी आत्मा जो मानव जाति को सोचने के लिए, सब बातों को ग्रहण करने, और सब बातों को सोचने, सब बातों का मूल्यांकन करने और जो बातें परमेश्वर सत्य में चाहता उसके अनुसार चलने में मदद देती है।
>
> — रेव्ह. एगस. जी. सत्यापुत्रा, अनुवादित

परमेश्वर के स्वरूप के पहलूओं के रूप में हमारे नैतिक और बौद्धिक गुणों को देख लेने के बाद, हम लोग अपना ध्यान अपने आत्मिक गुणों की ओर मोड़ने के लिए तैयार हैं।

आत्मिक

क्योंकि परमेश्वर का कोई भौतिक शरीर नहीं है, धर्मविज्ञानी अकसर कहते हैं कि वह "एक आत्मा" है। बेशक, इसका अर्थ यह नहीं है कि वह उसी तरह से सीमित है जैसे प्राणियों की आत्माएं हैं। इसके विपरीत, इसका अर्थ है कि वह प्राकृतिक प्रभुत्व के परे और उससे ऊपर है, अलौकिक क्षेत्र में जहां उसका कोई भौतिक शरीर नहीं है।

वेस्टमिन्स्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म का उसके प्रश्न और उत्तर संख्या 4 में यही वह अर्थ है। यह पूछने के बाद कि, "परमेश्वर क्या है?" कैटेकिज़्म का उत्तर यह कहने के द्वारा शुरू होता है:

> परमेश्वर एक आत्मा है।

इस विश्वास का कारण यूहन्ना 4:24 जैसे पदों से स्पष्ट है, जो स्पष्ट रूप से कहता है:

> परमेश्वर आत्मा है (यूहन्ना 4:24)।

परमेश्वर की आत्मिकता पुराने नियम के उन अनुच्छेदों में भी स्पष्ट है जो परमेश्वर की आत्मा के लिए संदर्भित हैं। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 1:2 सृष्टि के समय जल के ऊपर परमेश्वर की आत्मा के मण्डलाने को संदर्भित करता है। और निर्गमन 31:3 रिपोर्ट देता है कि मिलाप वाले तम्बू और सजावट को बनाने के लिए परमेश्वर की आत्मा ने शिल्पकार बेज़ालेल को सशक्त किया। इस तरह के पुराने नियम के अनुच्छेदों में, यह वाक्यांश "परमेश्वर का आत्मा" स्वयं परमेश्वर के लिए संदर्भित है, जो कि एक आत्मा है।

जैसा कि हमने पहले वाले पाठ में देखा, मनुष्यों के पास भी आत्मिक घटक है। परमेश्वर ने हमें भौतिक शरीरों और अभौतिक आत्माओं के साथ सृजा है। इसलिए, हमारा अभौतिक आत्मिक अस्तित्व ऐसा एक और गुण है जिसे हम परमेश्वर के साथ साझा करते हैं। हम इसको विशेष रूप से उत्पत्ति 2:7 में देख सकते हैं, जहाँ परमेश्वर ने आदम के शरीर के भीतर स्वयं अपनी श्वास को फूंकने के द्वारा आदम में आत्मा की सृष्टि की।

हमें यह भी बताना चाहिए कि परमेश्वर द्वारा आदम की रचना मानवता को परमेश्वर के अन्य प्राणियों से अलग करती है। उत्पत्ति 1:30, और 7:15 जैसे पद, जानवरों के प्राणों का उल्लेख करने के लिए "प्राण" और "आत्मा" के लिए इब्रानी शब्दों का उपयोग करते हैं। लेकिन सिर्फ आदम के लिए लिखा है कि उसने अपनी आत्मा को परमेश्वर द्वारा उसमें श्वास फूंकने के द्वारा प्राप्त किया। इसके अलावा, परमेश्वर के सभी प्राणियों में से, सिर्फ मनुष्यों के लिए कहा जाता है कि हमारे शरीरों के मरने के बाद मनुष्य का आत्मिक अस्तित्व होता है। सिर्फ मनुष्यों को अंतिम दिन में जिलाया जाएगा, जैसा कि हम यूहन्ना 5:28,

29 में पढ़ते हैं। और प्रकाशितवाक्य 10:11–21:5 दिखाता है कि सिर्फ मनुष्यों को या तो नरक में सदा के लिए दण्ड दिया जाएगा, या नए आकाश और नई पृथ्वी में सदा के पुरस्कृत किया जाएगा।

पहले की सदियों में, व्यवस्थित धर्मविज्ञानियों ने अक्सर सिखाया कि संचारी गुण — या ऐसे गुण जिन्हें हम परमेश्वर के साथ साझा करते हैं — हम में उसके स्वरूप के प्राथमिक पहलू थे। लेकिन ज्यादा हाल के बाइबल के विद्धानों ने उजागर किया कि हम उसके स्वरूप को मुख्य रूप से उस पद के संदर्भ में जिसका अधिकार हम रखते हैं, धारण करते हैं। फिर भी, वे गुण जो परमेश्वर हमारे साथ साझा करता है वे अभी भी उसके स्वरूप का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। हमारे पाप में गिरने के द्वारा ये गुण हम में भ्रष्ट हो गए हैं। लेकिन वे इतनी भी बुरी तरह से भ्रष्ट नहीं हुए थे कि हमारा उसके स्वरूप में होना खत्म हो गया। हम अभी भी सृष्टि पर उसके दास शासकों के पद का अधिकार रखते हैं। ओर उसके अनुग्रह और मदद से, हम अभी भी उसकी इच्छा को पृथ्वी पर पूरा करने में सक्षम हैं।

अभी तक अपने पाठ में, हमने एक पद या अधिकार के रूप में जिसे मानवता रखता है और हमारे पास मौजूद गुणों के एक समूह के रूप में परमेश्वर के स्वरूप का पता लगाया है। अब हम अपने अंतिम प्रमुख विषय को संबोधित करने के लिए तैयार हैं: परमेश्वर के स्वरूप के रूप हमारे सबंध।

संबंध

जब परमेश्वर ने मानवता को अपने स्वरूप के पद पर नियुक्त किया, तो उसने विभिन्न प्रकार के संबंधों को बनाया। परमेश्वर महान अधिपति या सम्राट बना और मानवता उसके दास या दास राजाओं के रूप में उसकी सेवा करने लगी। मनुष्य एक दूसरे के साथ साथी-शासकों के रूप में संबंधित होने लगे। और बाकी की सृष्टि मानवता के शासन तले प्रजा बनी।

हम तीन भागों में परमेश्वर के स्वरूप के रूप में अपने संबंधों की जाँच करेंगे। सबसे पहले, हम परमेश्वर के साथ अपने संबंध पर विचार करेंगे। दूसरा, हम अन्य मनुष्यों के साथ अपने संबंध को जाँचेंगे। और तीसरा हम सृष्टि के साथ अपने संबंध पर ध्यान-केंद्रित करेंगे। आइए पहले परमेश्वर से साथ अपने संबंध को देखते हैं।

परमेश्वर

जैसा कि हमने पहले के पाठ में देखा, जब परमेश्वर ने मानवता को सृजा तो उसने हमारे साथ वाचा वाले संबंध को बाँधा। यह वाचा एक महान सम्राट या अधिपति — इस केस में, परमेश्वर — और एक दास या दास राजा — इस केस में, मानवता के बीच प्राचीन मध्य-पूर्व की संधियों के समान थी। विशेष रूप से, मानवता के साथ परमेश्वर की वाचा ने तीन विशेषताओं को दिखाया जो प्राचीन मध्य-पूर्व संधियों में आम थी: अपने दास के प्रति अधिपति राजा का परोपकार, वफादारी जो अधिपति राजा अपने दास से चाहता था और वे परिणाम जो दास की वफादारी या विद्रोह का नतीजा होंगे। और जिस प्रकार प्राचीन मध्य-पूर्व की वाचाएं पीढ़ियों तक जारी रहते थे, मानवता के साथ परमेश्वर की वाचा भी हमारी पीढ़ियों में जारी हैं।

हम परमेश्वर के साथ हमारे वाचा वाले संबंध के तीन पहलूओं पर प्रकाश डालेंगे जो कि उसके स्वरूप के रूप में हमारी भूमिका के लिए विशिष्ट हैं: पहला परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करने का हमारा दायित्व; दूसरा पवित्र आराधना को बढ़ावा देने के लिए हमारा दायित्व; और तीसरा, परमेश्वर के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

राज्य का निर्माण करने की हमारी जिम्मेदारी। आइए परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करने के लिए हमारी बुलाहट के साथ शुरू करते हैं।

परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करना

प्राचीन मध्य-पूर्व में झूठे देवताओं और राजाओं की तस्वीरों के समान, सच्चे परमेश्वर के स्वरूप भी जहाँ कहीं वे दिखाई देते हैं उसके चरित्र को प्रतिबिंबित करने का अभिप्राय रखती हैं। और परमेश्वर का चरित्र पूर्णतः विशुद्ध, पवित्र और धर्मी है। परिणामस्वरूप, उसके मानव वाले स्वरूपों से भी पूर्णतः विशुद्ध, पवित्र और धर्मी होने की अपेक्षा की जाती है। 1 पतरस 1:15-16 में, पतरस ने यह लिखा:

> पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो; क्योंकि लिखा है: "पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ" (1 पतरस 1:15-16)।

और इब्रानियों का लेखक इब्रानियों 12:14 में कहता है:

> सब से मेल मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा (इब्रानियों 12:14)।

बेशक, पाप में गिरे हुए मनुष्य स्वयं अपनी योग्य के बल पर पूर्ण रूप से पवित्र नहीं हो सकते। हम परमेश्वर के सामने अपने अस्तित्व के लिए पूरी रीति से मसीह की सिद्ध पवित्रता पर भरोसा रखते हैं। फिर भी, परमेश्वर अभी भी हम से चाहता है कि अपने जीवनों में पवित्रता को इन माध्यमों द्वारा खोजें जैसे कि उसकी आज्ञाओं को मानना।

> मैं कहूँगा, कि सार में, परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था, दस अज्ञाएं, मूल रूप से परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करते हैं। वे हमें बताते हैं कि परमेश्वर क्या चाहता है। और इसलिए, वे भावशून्य नियम नहीं है जो कि परमेश्वर से अलग हों। यह ऐसा नहीं कि परमेश्वर तर्क-वितर्क कर रहा था, कि, "क्या मुझे उन्हें हत्या करने के लिए या नहीं करने के लिए बताना चाहिए?" नहीं, परमेश्वर ने छठी आज्ञा में कहा "हत्या न करना" क्योंकि मौलिक रूप से परमेश्वर हत्यारा नहीं है। आप इसे सकारात्मक रीति से भी कह सकते थे। यह कहता है "हत्या न करना," लेकिन हम कह सकते थे, "निर्दोष मानवीय जीवन का सम्मान आप जितना कुछ भी कर सकते हैं, उसे कीजिए।" यही परमेश्वर करता है। यही परमेश्वर चाहता है। या आज्ञा हम से व्यभिचार न करने के लिए कहती है। आप इसे सकारात्मक रीति से कह सकते थे। "उन लोगों के प्रति वफादार रहें, जिनके साथ आप घनिष्ठ हैं।" अच्छा तो, क्यों? क्योंकि परमेश्वर उसके समान है। और इसलिए, क्योंकि परमेश्वर की व्यवस्था वास्तव में बताती है कि वह कौन है और वह किस के समान है, चूंकि हम परमेश्वर के संसार में रह रहे हैं, और हम परमेश्वर के स्वरूप को धारण करने वाले उसके समान होने के लिए बनाए गए हैं, उसके समान कार्य करने के लिए, यदि आप चाहते हैं — यह स्वरूप को धारण करने का एक हिस्सा है — इस प्रकार हम कह सकते हैं कि परमेश्वर की व्यवस्था का हमसे संबंधित न होना या हमारे ऊपर लागू न होना असंभव होगा यदि हम परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था के बारे में बात करते हैं।
>
> — डॉ. डेविड ड्ब्लू जोन्स

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दुःख की बात है, कि, हम परमेश्वर की आज्ञापालन करने की और उसके वाचा वाली आज्ञाओं को मानने की कितनी भी कोशिश क्यों न करें — उसके प्रति वफादार बनने की हम कितनी भी कोशिश क्यों न करें — हम सदैव असफल रहेंगे। पवित्र शास्त्र इसको सबोपदेशक 7:20; रोमियों 7:18, 19 और 8:3; और गलातियों 5:17 जैसी जगहों पर स्पष्ट करता है। जैसा कि प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 1:8, 10 में लिखा:

> **यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं, और हम में सत्य नहीं...यदि हम कहें कि हम ने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है (1 यूहन्ना 1:8, 10)।**

और विस्टमिन्स्टर लार्जर कैटेकिज़्म, प्रश्न 149 का उत्तर, सिद्ध होने की हमारी अयोग्यता के बारे में इस सारांश को प्रस्तुत करता है:

> **कोई भी मनुष्य, न तो स्वयं से, या इस जीवन में प्राप्त किसी भी अन्य अनुग्रह से, परमेश्वर की आज्ञाओं को सिद्ध रूप से मानने में योग्य नहीं है; लेकिन प्रतिदिन उन्हें विचार, वचन, और कर्म में तोड़ता है।**

इस तथ्य के बावजूद कि, मसीह को छोड़कर, कोई भी परमेश्वर का स्वरूप, इस जीवन में उसके चरित्र को सिद्धता से प्रतिबिंबित नहीं कर सकता है, हम सबका कर्तव्य है कि अपने पूरे व्यक्तित्व के साथ पवित्रता और धार्मिकता को खोजें। और परमेश्वर के अनुग्रह से, उस प्रक्रिया के माध्यम से हम लोग उसके और स्पष्ट स्वरूप बन रहे हैं। इसीलिए 2 कुरिन्थियों 3:18 में, पौलुस लिख सका:

> **जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है,...तो हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं (2 कुरिन्थियों 3:18)।**

परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करने के हमारे दायित्वों के संदर्भ में परमेश्वर के साथ अपने संबंधों को देख लेने के बाद, आइए पवित्र आराधना को बढ़ावा देने अपने कर्त्तव्य पर विचार करें।

पवित्र आराधना को बढ़ावा देना

मनुष्य परमेश्वर का वास्तविक स्वरूप है, इस तथ्य का अर्थ है कि मूर्तियां और अन्य गैर-मानवीय उसके निरूपण झूठे स्वरूप हैं। यद्यपि पाप में गिरा हुआ हमारा अंतर्ज्ञान सूझाव दे सकता है कि गढ़ी गई प्रतिमाओं के माध्यम से परमेश्वर की आराधना करना उसे सम्मानित करेगा, लेकिन पवित्र शास्त्र इस विचार को खारिज है। यह वह पाप हो सकता है जिसे निर्गमन 32 में हारून ने किया, जब उसने यहोवा की आराधना में इस्तेमाल करने हेतु इस्राएल के लिए सुनहरा बछड़ा बनाया। और निर्गमन 20:3, जहाँ परमेश्वर खुदी हुई या गढ़ी गई प्रतिमाओं को मना किया, स्पष्ट रूप से दृश्यमान निरूपणों के माध्यम से उसकी आराधना करने पर प्रतिबंध लगाता है। मूसा शायद प्रतिमाओं के इस निषिद्ध उपयोग को व्यवस्थाविवरण 4:15-16 में संबोधित कर रहा था, जहाँ उसने लिखा:

> **जब यहोवा ने तुम से होरेब पर्वत पर आग के बीच में से बातें कीं तब तुम को कोई रूप न दिखाई पड़ा। इसलिए तुम अपने विषय में बहुत सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तुम बिगड़कर कोई मूर्ति खोदकर बना लो (व्यवस्थाविवरण 4:15-16)।**

मूसा ने अपने श्रोताओं को याद दिलाया कि परमेश्वर ने स्वयं को किसी शारीरिक रूप में प्रकट नहीं किया था क्योंकि वह उनकी आराधना की विशुद्धता को बचाना चाहता था। वह परमेश्वर के साथ इस्राएल के संबंध को विशुद्ध रखना चाहता था, अर्थात आसपास के देशों के मूर्तिपूजक धर्मविज्ञान और प्रथाओं से मिलावट रहित। वह उन्हें ऐसा नहीं सोचने देना चाहता था कि परमेश्वर को किसी भी प्रकार की वस्तु से

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आत्मिक रूप से बांधा जा सकता है, या ऐसी वस्तुएँ परमेश्वर को सम्मानित करने या उसकी स्वीकृति या सहायता प्राप्त करने के लिए उपयोग की जा सकती हैं। परमेश्वर सच्चा परमेश्वर है, और उसके साथ दूसरे देशों के झूठे देवताओं के समान व्यवहार नहीं किया जाना है।

> मुझे नहीं लगता कि परमेश्वर चाहता है कि हम अन्य प्राचीन मध्य-पूर्व संस्कृतियों के समान उसकी आराधना करें जितना कि वे चाहते थे कि हम प्रतिमाओं की आराधना करें। परमेश्वर कोई प्रतिमा नहीं है; वह एक व्यक्ति है। वास्तव में, हमें समय के साथ पता चला, कि वह तीन व्यक्ति है: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। लेकिन यह कहने के बाद, एक बार जब आप प्रतिमा की पूजा करने लगते हैं, ऐतिहासिक रूप से क्या होता है कि हम उस प्रतिमा से, जो हमारे बारे में हमें सबसे अच्छे गुण लगते हैं तुलना करने लग जाते हैं। इसलिए, समय के साथ हम अंततः, उस प्रतिमा के माध्यम से स्वयं की पूजा करते हैं।
>
> — डॉ. मैट फ्रायडमैन

अभी तक हमने देखा कि परमेश्वर के साथ हमारा वाचा वाला संबंध उसके स्वरूप से चाहता है कि परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करे और विशुद्ध आराधना को बढ़ावा दे। अब आइए परमेश्वर के राज्य को बनाने के अपने दायित्व को देखते हैं।

परमेश्वर के राज्य को बनाना

जब परमेश्वर ने उत्पत्ति 1:28 में मानवता को "पृथ्वी में भर जाने" की आज्ञा दी, तो वह हमें संसार भर में हर जगह अपने स्वरूप को रखने के लिए निर्देश दे रहा था। जैसा कि हमने देखा, कि लोगों को राजा की परोपकारिता याद दिलाने, लोगों द्वारा राजा के प्रति आज्ञापालन को प्रोत्साहित करने, और यह दिखाने के लिए कि राजा अपने लोगों के साथ मौजूद थे, प्राचीन राजा अपने राज्य भर में अपनी प्रतिमाओं को रखते थे। और इसी तरह, जैसे-जैसे मनुष्य संसार भर में फैलते हैं, तो वे यह प्रदर्शित करते हैं कि जहाँ कहीं वे जाते हैं परमेश्वर राज करता है। लेकिन यह प्रदर्शन केवल प्रतीकात्मक नहीं है। क्योंकि मनुष्य परमेश्वर के उप-राज्य-प्रतिनिधि या दास राजा भी हैं, हम उसके शासन को अपने साथ लेकर जहाँ कहीं भी हम जाते हैं इसलिए, जहाँ कहीं भी हम "पृथ्वी को वश में करते हैं," जैसे कि परमेश्वर ने उत्पत्ति 1:28 आज्ञा भी दी, तो हम उस नियुक्त कार्य को पूरा कर रहे हैं।

अब हमें पहचानने की आवश्यकता है कि परमेश्वर का राज्य ही संसार में केवल अकेला नहीं है। परमेश्वर के लिए सबसे पहला विरोध शैतान के राज्य से आता है। पाप में गिरे सभी मनुष्य शत्रु के इसी राज्य में पैदा होते हैं। और जब तक हम मसीह पर विश्वास नहीं लाते, तब तक कई तरीकों में परमेश्वर के राज्य के खिलाफ संघर्ष करना जारी रखते हैं — चाहे वह हमें पता हो या नहीं। जैसे कि पौलुस ने इफिसियों 2:1-2 में कहा:

> तुम अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे, जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है (इफिसियों 2:1-2)।

फिर भी, सभी मनुष्यों को परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने का कार्य दिया गया है। और जो इसके विपरीत उसके शत्रु के राज्य का निर्माण करते हैं देशद्रोह के दोषी हैं।

परमेश्वर के सापेक्ष में परमेश्वर के स्वरूप के रूप में हमारे संबंधों पर विचार करने के बाद, आइए अपने ध्यान को अन्य मनुष्यों की ओर मोड़ते हैं।

मनुष्य

परमेश्वर के स्वरूप में रचा जाना, अन्य मनुष्यों के साथ हमारे संबंधों को कई तरीकों से प्रभावित करता है। लेकिन इस पाठ में अपने उद्देश्यों के लिए, हम केवल दो का उल्लेख करेंगे: लोगों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करने का हमारा दायित्व, और न्याय को बनाए रखने का महत्व। हम मनुष्य के सम्मान पर विचार करने के द्वारा शुरु करेंगे।

सम्मान

कल्पना कीजिए कि एक नए माता व पिता ने अपने शिशु की तस्वीरें ली और उन्हें अपने परिवार के सदस्यों को भेजी। कुछ परिवार सदस्यों ने शिशु को दुलार किया, इसलिए उन्होंने तस्वीरों को अपने घरों में लगाया। अन्यों ने उन्हें अपने दोस्तों को दिखाने के लिए अपने बटुए और पर्स में रखा, या उनकी देखभाल के लिए, उन्हें सुरक्षित रखने के लिए फोटो एल्बम में लगाया। लेकिन कुछ परिवार के सदस्यों ने शिशु को अपमानित किया, उसके तस्वीर को बिगाड़ दिया, उन्हें कचरे में फेंक दिया। खैर, आप कल्पना कर सकते हैं कि माता-पिता उन लोगों से कितना नाराज़ होंगे जिन्होंने चित्रों में उनके बच्चे के लिए ऐसा अनादर दिखाया होगा। मानवता में परमेश्वर के स्वरूप के बारे में कुछ ऐसा ही सच है। प्रत्येक मनुष्य उसके लिए कीमती है क्योंकि प्रत्येक मनुष्य उसके स्वरूप को धारण करता है। और इसका अर्थ है कि प्रत्येक मनुष्य आदर और सम्मान के साथ व्यवहार किए जाने का हकदार है।

उत्पत्ति 1:27, 28 और 5:1-3, सीखाते हैं कि प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप को धारण करता है। यह हमारे लिंग, उम्र, जाति, धन, सामाजिक स्थिति, स्वास्थ्य, योग्यताएं, दिखावट या किसी और चीज़ के बिना भी सच है, जो हमें एक दूसरे से अलग करता है। हाँ, हमारे गुण परमेश्वर को अलग-अलग मात्राओं में प्रतिबिंबित कर सकते हैं। लेकिन प्रत्येक मनुष्य आदर और सम्मान के साथ व्यवहार किए जाने के लिए पर्याप्त मात्रा में परमेश्वर के स्वरूप को धारण करता है। प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी रूप में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है। और परमेश्वर के प्रतिनिधित्व के साथ दुर्व्यवहार करना स्वयं परमेश्वर का अपमान करना है।

> उत्पत्ति 1 के अनुसार, मनुष्यों के रूप में हमारी पहचान का एक आधारभूत तथ्य है कि परमेश्वर ने हमें अपने स्वरूप में बनाया। फिर कुछ मायनों में, परमेश्वर को प्रतिबिंबित करने और संसार में उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए सभी मनुष्यों को बनाया गया है। और यह सभी मनुष्यों से लिए सच है, और जिस तरीके से हमें हर दूसरे मनुष्य के साथ व्यवहार करना चाहिए जो हमारे संपर्क में आता है, उसका बहुत बड़ा नैतिक निहितार्थ है। यदि, वास्तव में, सभी मनुष्य परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं, तो फिर जिस तरीके से हम दूसरे मनुष्य के साथ व्यवहार करते हैं वह परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को दर्शाता है। जिस हद तक हम किसी अन्य मनुष्य का आदर करते हैं, हम उसके सृष्टिकर्ता परमेश्वर का आदर कर रहे हैं। जिस हद तक हम अन्य मनुष्यों का अपमान करते, चोट लगाते और निंदा करते हैं, हम परमेश्वर का अपमान करते हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 9:6 में हत्या के पाप के लिए मृत्यु दण्ड की निर्णायक सजा दी जाती है, क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप में रचा गया है। इस कारण, हत्या का शिकार हुआ व्यक्ति परमेश्वर के स्वरूप को धारण किए हुए है, और जब आप स्वरूप को धारण किए हुए व्यक्ति पर आक्रमण करते हैं तो आप परमेश्वर पर आक्रमण कर रहे हैं। याकूब 3:9 में, हमसे कहा गया है कि एक दूसरे की निंदा मत करो। तो, अब, न कि शारीरिक आक्रमण लेकिन मौखिक आक्रमण, लेकिन कारण है

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर की समानता में रचा गया है। ठीक इसी शब्दावली का प्रयोग न करते हुए, लेकिन नीतिवचन 14:31 में हम पढ़ते हैं:
>
> [जो] कंगाल पर अंधेर करता, वह उसके कर्ता की निंदा करता है, परन्तु [जो] दरिद्र पर अनुग्रह करता, वह उसकी [महिमा] करता है (नीतिवचन 14:31)।
>
> इस तरह, यहाँ पर मामला आर्थिक उत्पीड़न का है। चाहे यह शारीरिक या मौखिक या आर्थिक हो, सिद्धांत स्पष्ट हैं: परमेश्वर के स्वरूप को धारण करने वाले से हम जैसा व्यवहार करते हैं वह सब कुछ स्वयं परमेश्वर के प्रति हमारे दृष्टिकोण और प्रतिक्रिया से संबंधित है। और इन सभी अनुच्छेदों ध्यान देने वाली महत्वपूर्ण बात है कि मानवता के लिए शब्दावली उतनी ही आम है जितनी यह हो सकती है। यह केवल परमेश्वर के वाचा वाले लोगों तक ही सीमित नहीं है; यह मानवता के रूप में मानवता ही है। इसलिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या जाति, क्या लिंग, क्या सामाजिक आर्थिक वर्ग है, चाहे व्यक्ति धार्मिक या अधार्मिक, चाहे व्यक्ति नैतिक या अनैतिक हो, प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप को धारण करता है, और इसलिए वे आदर और सम्मान के हकदार हैं, और जिस तरह से हम उनसे व्यवहार करते हैं वह परमेश्वर के प्रति हमारे ज्यादातर व्यवहार को दर्शाता है।
>
> — डॉ. स्टीवन सी. रॉय

सभी मनुष्यों की गरिमा को पहचानने के अलावा, न्याय को बनाये रखना भी महत्वपूर्ण है।

न्याय

पवित्र शास्त्र सीधे तरीके से आज्ञा देता है कि हम परमेश्वर के सभी स्वरूपों के लिए न्याय को बना कर रखें। उत्पत्ति 9:6 हत्या की मनाही इस आधार पर करता है कि सभी मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं; और याकूब 3:9 दूसरे लोगों की निंदा करने की मनाही इसी कारण के लिए करता है। परमेश्वर के राज्य की ओर देखने के द्वारा हम लोग न्याय को बनाए रखने के महत्व को भी देख सकते हैं। जब परमेश्वर ने अपने राज्य का निर्माण करने के लिए मानवता को नियुक्त किया, तो उसके वाचा वाली व्यवस्था को मानने और उस व्यवस्था को निष्पक्ष और न्यायपूर्ण तरीके से लागू करने की उसने आज्ञा दी।

परमेश्वर के दास राजा के रूप में न्याय का संरक्षण करने के लिए हमें बाध्य करने की हमारी भूमिका को देखने का एक सबसे अच्छा तरीका है, उस बात को देखना कि पवित्रशास्त्र अच्छे राजाओं के बारे में क्या कहता है। उदाहरण के लिए, 2 इतिहास 9:8 में, शीबा की रानी ने सुलैमान राजा के लिए इस प्रशंसा की पेशकश की:

> धन्य है तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझ से ऐसा प्रसन्न हुआ कि तुझे अपनी राजगद्दी पर इसलिए विराजमान किया कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की ओर से राज्य करे। तेरा परमेश्वर जो इस्राएल से प्रेम करके उन्हें सदा के लिए स्थिर करना चाहता था, इसी कारण उसने तुझे न्याय और धर्म करने को उनका राजा बना दिया (2 इतिहास 9:8)।

शीबा की रानी ने ठीक ही कहा, कि अच्छे राजा “यहोवा के लिए राज्य,” करते हैं, अर्थात वे उसके द्वारा उन्हें सौंपे गए अधिकार का प्रयोग करते हैं। और वे इस अधिकार का उपयोग न्याय और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

धार्मिकता बनाए रखने के लिए करते हैं। क्योंकि सभी मनुष्य सुलैमान वाले उसी भूमिका को साझा करते हैं, हम भी अपने साथी मनुष्यों के लिए न्याय को बनाए रखने की जिम्मेदारी साझा करते हैं।

हम न्याय के बारे में इसी तरह की भाषा को आने वाले मसीहा या ख्रीष्ट के लिए यशायाह वाले विवरण में पाते हैं — परमेश्वर के पृथ्वी वाले साम्राज्य पर अंतिम राजा, जिसे अब हम यीशु के रूप में जानते हैं। यशायाह 42:1-4 के अनुसार:

> वह जाति जाति के लिए न्याय प्रगट करेगा...वह सच्चाई से न्याय चुकाएगा; वह न थकेगा और न हियाव छोड़ेगा जब तक वह न्याय को पृथ्वी पर स्थिर न करे। और द्वीपों के लोग उसकी व्यवस्था की बाट जोहेंगे (यशायाह 42:1-4)।

जैसा कि सुलैमान और यीशु का उदाहरण दिखाता है, सभी मानवता के लिए न्याय को संरक्षित रखना परमेश्वर के स्वरूप के रूप में हमारी भूमिका का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

अब जबति हमने परमेश्वर और दूसरे मनुष्यों के साथ हमारे संबंधों का पता लगा लिया है, आइए बाकी की सृष्टि पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

सृष्टि

सृष्टि के साथ हमारा संबंध उत्पत्ति 1:27-28 में वर्णित है। इन परिचित पदों को फिर से सुनिए:

> परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। परमेश्वर ने उनको आशीष दी और उनसे कहा, "फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो। और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो (उत्पत्ति 1:27-28)।

परमेश्वर के स्वरूप के रूप में, मनुष्य सृष्टि का रखवाला है। हमारा कार्य पृथ्वी को भरना और वश में करना, और उसके सभी जीवों पर अधिकार रखना है। धर्मविज्ञानी अकसर इस सौंपे गए काम को "सांस्कृतिक अध्यादेश" के रूप में संदर्भित करते हैं, क्योंकि इसकी माँग थी कि हम संसार का विकास करें, इसे एक जंगल से बदल कर वाटिका बनाएं, और हर एक जगह पर मानव संस्कृति और समाज को स्थापित करें। लेकिन वास्तव में इसमें क्या शामिल है?

> जब मैं उत्पत्ति 1 और 2 को पढ़ता हूँ और उन जिम्मेदारियों के बारे में सोचता हूँ जो मनुष्यों के रूप में हमें दी गई हैं, तो वे दो श्रेणियों में विभाजित होते प्रतीत होते हैं। एक ओर परमेश्वर हमसे कहता है, "फूलो फलो और पृथ्वी में भर जाओ।" और यह अधिक मानव जीवन को पैदा करने के लिए एक अद्भुत आदेश है, एक तरह से, उस सृष्टि में जिसे परमेश्वर ने बनाया, उसमें उप-सृष्टिकर्ता होना। दूसरा आदेश, या दूसरा कार्य जो हमें दिया गया है, वह सृष्टि की देखभाल करना है, परमेश्वर की महिमा के लिए इसका प्रबंधन करना — "इसको वश में करना" वह बात है जो हमें उत्पत्ति के इन अध्यायो में बताई गई है। इस तरह हमें न सिर्फ प्रजनन करने लिए, न सिर्फ फलने फूलने के लिए कहा गया है, लेकिन जब हम मानवता के रूप में बढ़ते हैं, तो हमें उस सृष्टि की देखभाल करनी है जिसे परमेश्वर ने बनाया है। हमें पृथ्वी में निरंतर जारी रहने वाली व्यवस्था को लाना है, हमें सृष्टि में फलवन्त होना है, हमें ज़मीन पर खेती करनी और उसकी देखभाल करनी है।

> हमें उस रचनात्मक आवेग को लेना है जो परमेश्वर से आता है जो हमें निहित किया गया है, उसके स्वरूप में बनाया गया है, और उस संसार में सृष्टि करना जारी रखना है जो उसने हमें दिया है।
>
> — रेव्ह. डा. जॉन डब्ल्यू येट्स

उत्पत्ति 2:8 में, हमें बताया गया है कि परमेश्वर ने अदन में एक वाटिका लगाई। लेकिन हमें कभी नहीं बताया गया कि बाकी का संसार कैसा दिखता था। हम जानते हैं कि पूरे उत्पत्ति 1 में परमेश्वर ने संसार को "अच्छा" कहा। और बाइबल के विद्धान इस बात से सहमत प्रतीत होते हैं कि, इस मामले में, इब्रानी शब्द *ठोव्ब,* जिसका अनुवाद हम "अच्छे" के रूप में करते हैं, उसका अर्थ "परमेश्वर को भावता हुआ" और "शारीरिक रूप से सुंदर" दोनों है। फिर भी, इस तथ्य में कि मानवता को पृथ्वी को वश में करने का कार्य सौंपा गया था, यह अंतर्निहित है कि अभी और भी काम करना बाकी था।

उत्पत्ति 3:8 कहता है कि परमेश्वर अदन की वाटिका में चलता-फिरता था। इसलिए, यह उसके निवास के लिए उपयुक्त स्थान था। जैसा कि हमने पहले के पाठ में देखा, उसने आदम और हव्वा को वाटिका में याजकों का कार्य दिया। इसलिए, वाटिका उसका पवित्र निवास या मंदिर भी था।

लेकिन ये तथ्य संकेत देते हैं कि बाकी का संसार भिन्न था। सांस्कृतिक अध्यादेश के माध्यम से, परमेश्वर ने मनुष्यों से वाटिका की सीमाओं के बाहर बाकी के संसार में फैलने की, और जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते हैं तो उसे वश करके, पूरे संसार को परमेश्वर के वाटिका वाले पवित्र स्थान में बदलने की अपेक्षा की।

संसार को विकसित करने के अलावा, मानवता को जानवरों के ऊपर राज करने का कार्य सौंपा गया था। और यह देखने के द्वारा कि कैसे परमेश्वर की व्यवस्था ने बाद में जानवरों के लिए दयालु व्यवहार को प्रदान किया हम इसका अंदाजा लगा सकते हैं कि इसका क्या अर्थ था। पालतू बनाए गए जानवरों के संबंध में: निर्गमन 20:10 उन्हें सप्ताह वाले सब्त विश्राम को प्रदान करता है; व्यवस्थाविवरण 22:10 असमान जूएं पर प्रतिबंध लगाता है, शायद शारीरिक तनाव के कारण जो वह पैदा करता है; और व्यवस्थाविवरण 25:4 बैल को उस अनाज को खाने की अनुमति देता है जिसे वह दाँवता है। जंगली जानवरों के संबंध में: निर्गमन 23:11 छोड़े गए खेत से उन्हें खाने की अनुमति देता है; और व्यवस्थाविवरण 22:6, 7 जंगली पक्षी को वह अपने अण्डों पर बैठी हो तो उसे मारने या पकड़ने पर प्रतिबंध लगाता है।

पृथ्वी और उसके जीवों के ऊपर हमारी जिम्मेदारियाँ संकेत देते हैं कि संसार सिर्फ हमारे उपयोग के लिए अस्तित्व में नहीं है। इसके विपरीत, यह मूल रूप से परमेश्वर के उपयोग के लिए अस्तित्व में है। इसलिए, उसके स्वरूप के रूप में, हमारा यह काम है कि उन चीज़ों की रक्षा और प्रबंधन करें जिन्हें उसने "अच्छा" कहा, और उन्हें नुकसान पहुँचाने के बजाय उन तरीकों से विकसित करें जो उनमें सुधार करता हो।

परमेश्वर का स्वरूप होने के उस तरीके में कई मायने हैं जिसमें हम परमेश्वर से, अन्य लोगों से, और अपने आसपास के संसार से संबंध रखते हैं। पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रतिनिधि होने के नाते, हमारे विचार, व्यवहार और भावनाएं उस पर प्रतिबिंबित होते हैं। और वह उन तरीकों में हमारी भूमिका निभाने के लिए हमें व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार ठहराता है जो उसके उद्देश्यों को पूरा करते हैं, उसकी सृष्टि और जीवों को लाभ पहुँचाते हैं, और उसकी महिमा करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उपसंहार

इस पाठ में, हमने परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मानवता की भूमिका के तीन पहलूओं पर विचार किया। हमने झूठे देवताओं की प्रतिमाओं और सच्चे परमेश्वर के स्वरूपों की तुलना करने के द्वारा अपने पद का पता लगाया। हमने परमेश्वर के स्वरूप के रूप में हमारे पास नैतिक, बौद्धिक और आत्मिक गुणों का वर्णन किया। और हमने परमेश्वर, अन्य मनुष्यों और बाकी की सृष्टि के साथ हमारे संबंधों पर विचार किया।

कई आधुनिक दर्शन पूरी रीति से मानव-केंद्रित हैं। उनका विश्वास है कि परम अधिकार के रूप में परमेश्वर पर ध्यान-केंद्रित करना मनुष्यों को गुलाम बना देता है; जबकि, परमेश्वर से अलग मानवता पर ध्यान-केंद्रित करना आत्म-सम्मान और आत्म-विश्वास को बढ़ावा देता है। लेकिन यह एकदम उलटी बात है। पृथ्वी पर परमेश्वर के स्वरूप के रूप में, जितना हम कभी भी अपने दम पर कर सकते थे उसकी तुलना में हमारे पास ज्यादा सम्मान और ज्यादा महत्व है। परमेश्वर ने अपना स्वरूप हम पर रखा है, हमें राजा बनाया है। हम उसके शासन का प्रतिनिधित्व करने, उसके सौंपे गए अधिकार का प्रयोग करने, उसके चरित्र को व्यक्त करने और उसके इच्छा को पूरा करने के लिए जिम्मेदार हैं। संभवतः मानवता को इससे ज्यादा महत्व और आत्मविश्वास और क्या दे सकता है?

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।